राष्ट्रीय हिंदी मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष-01, अंक-2, फरवरी 2026, पृष्ठ-32, मूल्य-100/-

PRGI NO : CTBIL/25/A3539

जयति लोकदर्शन

लोक संवेदना का स्वर...

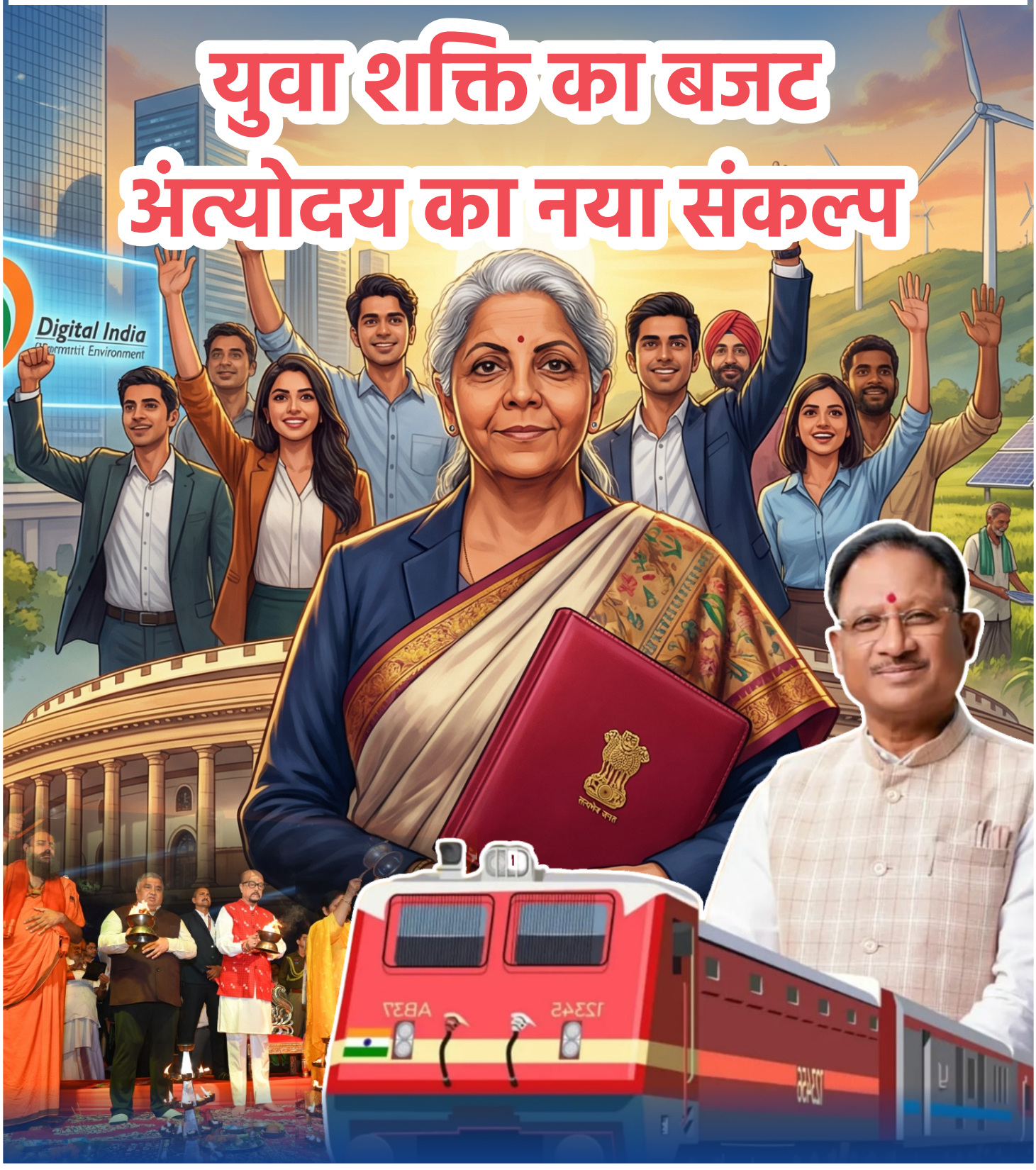

महंगी बिजली और हर महीने बढता बिल... क्या आप भी इसी से परेशान है ?

तो आज ही हमसे सोलर पैनल लगवाएं
और बढती बिजली बिल से आजादी पाएं...

Solaronix India®

सुरज की शक्ति, भारत की प्रगति

[Leading the Solar Revolution]

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ़्त बिजली योजना..

- 450+ यूनिट मुफ़्त बिजली 3KWP में..
- 5 साल तक फ्री मेंटेनेंस
- 25 साल की वारंटी

स्पेशल ऑफर

3KW सोलर प्लांट लगवाएं मात्र..

Rs. 1,80,000

(ऑफर सिमित समय के लिए)

साथ में पाएं

Rs. 1,08,000

की सब्सिडी..

100% बैंक फाइनेंस सुविधा उपलब्ध..

TATA POWER SOLAR | WAAREE One with the Sun | adani Solar | RAYZON SOLAR | EN-ICON | POLYCAB WIRES & CABLES

आपका प्रतिदिन बढ़ता बिजली बिल अब होगा जीरो (रु.0)

विकाश शर्मा

सौरभ शर्मा

THE SHARMA BROTHERS VENTURE

बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने बाई पास रोड, कुरुद 9907401040, 9977330476

मासिक पत्रिका
विश्वसनीय खबरों की नई लहर
जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

स्वामी, प्रकाशक एवं प्रधान संपादक
सतीश शर्मा

संपादन सलाहकार मंडल
प्रो. डॉ. अनुसुइया अग्रवाल
डुमनलाल ध्रुव

विधिक सलाहकार
लक्ष्मीकांत द्विवेदी

जिला ब्यूरो
तुकाराम कंसारी (गरियाबंद)
खिलेश्वर शर्मा (रायपुर)
प्रेम कुमार चक्रधारी (रायपुर)

प्रसार प्रकल्प
प्रशांत कुमार सोनवानी
रामेश्वर साहू

तकनीकी सहायक
प्रतीक अग्रवाल
राज शुक्ला

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त समाचार, लेख एवं विचार संबंधित संवाददाता, लेखक, विज्ञापनदाता के निजी विचार हैं। इनके लिए संपादक, प्रकाशक अथवा मुद्रक, उत्तरदायी नहीं होंगे। पत्रिका का उद्देश्य सूचना प्रदान करना है। किसीव्यक्ति, संस्था, समुदाय की भावना को ठेस पहुंचाना आशय नहीं है। त्रुटिवश प्रकाशित किसी भी सामग्री हेतु खेद है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालीन क्षेत्र कुरुद होगा।

अनुक्रमणिका

13 घने जंगलों से झरनों तक: छत्तीसगढ़ का पर्यटन वैभव

14 तिरस्कार से सम्मान तक : ट्रांसजेंडर अधिकारों की लड़ाई का चेहरा बनीं विद्या राजपूत

- बजट के मुख्य बिंदु 08
- डबल इंजन सरकार का बड़ा... 09
- केंद्रीय बजट 2026-27: विकसित भारत... 12
- राजिम कुंभ कल्प 2026.. 16
- प्रभात मिश्रा बने छत्तीसगढ़... 21
- छत्तीसगढ़ की सेवा भावना को राष्ट्रीय... 22
- छत्तीसगढ़ी फाग का लोकरंग... 24
- छत्तीसगढ़ में गांव-गांव बिछा सड़कों... 27
- 'धुरंधर 2' में बरसेगा हमजा का कहर... 30

स्वामी, प्रकाशक व संपादक : सतीश शर्मा (Press and Registration of Periodicals Act, 2023 के अंतर्गत समाचार चयन के लिए उत्तरदायी); मुद्रक : अमित कुमार पटेल द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, बी-1, रेमंड शोरूम के सामने, श्याम मार्केट, पंडरी, रायपुर (छ.ग.) में मुद्रित एवं ब्राह्मण पारा नारी (कुरुद), जिला-धमतरी (छ.ग.) से प्रकाशित।
PRGI Reg. No. CTBIL/25/A3539 , email – cglokdarshan@gmail.com, www.cglokdarshan.com, mo. 9893664533

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

सम्पादकीय

"बसंत की नवचेतना और विकास की दिशा: संस्कृति, समाज और बजट का समन्वय"

फरवरी का महीना प्रकृति और समाज दोनों के लिए परिवर्तन और नवसृजन का संदेश लेकर आता है। एक ओर बसंत ऋतु धरती को नए रंगों और उमंगों से भर देती है, तो दूसरी ओर इसी समय देश की दिशा और दशा तय करने वाला केंद्र सरकार का आम बजट भी प्रस्तुत होता है। बसंत और बजट–दोनों ही अपने–अपने अर्थों में नवआरंभ और संभावनाओं के प्रतीक हैं।

बसंत भारतीय लोकजीवन में उत्साह, सृजन और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का पर्व है। खेतों में लहलहाती फसलें, फाग और लोकगीतों की मधुर धुन, मेलों और उत्सवों की परंपरा–ये सब हमारे समाज की जीवंतता को प्रकट करते हैं। लोकसंस्कृति हमें यह सिखाती है कि जीवन केवल भौतिक साधनों से नहीं, बल्कि संवेदनाओं, परंपराओं और सामूहिकता से भी समृद्ध होता है।

इसी संदर्भ में जब हम केंद्र सरकार के बजट की ओर देखते हैं, तो अपेक्षा करते हैं कि विकास की धारा समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। बजट केवल आय–व्यय का लेखा–जोखा नहीं होता, बल्कि यह देश की प्राथमिकताओं और भविष्य की दिशा का संकेत भी देता है। ग्रामीण विकास, कृषि, शिक्षा, संस्कृति, युवा और रोजगार जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यही वे आधार हैं जिन पर राष्ट्र की सुदृढ़ नींव निर्मित होती है।

आज आवश्यकता इस बात की भी है कि विकास की योजनाओं में लोककला, लोकभाषा और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण को पर्याप्त स्थान मिले। आर्थिक प्रगति तभी सार्थक मानी जाएगी, जब वह हमारी सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त बनाए। गाँवों में बसे साहित्यकार, कलाकार, शिल्पकार और लोकगायक केवल परंपरा के वाहक ही नहीं, बल्कि भारत की आत्मा के प्रतिनिधि हैं।

"जयति लोकदर्शन" का मानना है कि विकास और संस्कृति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक–दूसरे के पूरक हैं। जिस प्रकार बसंत प्रकृति को नवीनता प्रदान करता है, उसी प्रकार एक दूरदर्शी और जनहितकारी बजट समाज में आशा और विश्वास का संचार करता है।

इस फरवरी अंक के माध्यम से हम अपने पाठकों से यही आग्रह करते हैं कि वे विकास की प्रक्रिया को केवल आँकड़ों में नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के समग्र उत्थान के रूप में देखें। जब आर्थिक प्रगति के साथ लोकमूल्यों और परंपराओं का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा, तभी सच्चे अर्थों में समृद्ध और सशक्त भारत का निर्माण संभव होगा।

सतीश शर्मा
संपादक
जयति लोकदर्शन

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

संत कवि पवन दीवान की प्रेम की कविता..

चंदा...

एक थी लडकी मेरे गांव में
चंदा उसका नाम था,
वह थी कली अछूती लेकिन
हर भौंरा बदनाम था।

महानदी सी लहराती थी
जैसे उसकी चाल में
पवन हठीला ज्यों थिरका हो
नौकाओं की पाल में
प्रश्न चिन्ह सी लचक कमर में
आगे पूर्ण विराम था
वह थी बनवासिन सीता-सी
बिछडा उसका राम था।

उसकी गागर की लहरों से
सागर भी शरमाता था
गोरी पिण्डलियों को धोने
पनघट तक आ जाता था
वह नदिया थी हर प्यासे को
छलना उसका काम था
वह ढाला करती थी लेकिन
खाली रहता जाम था।

गीत गूँजता अमरायी में
चरवाहे की तान से
छंद-पंक्ति-सी वह बलखाती
आंगन में अभिमान से
उमर दिवस की घटने लगती
चढता आता घाम था,
उसका सपना देहरी पर
बेसुध करता आराम था।

वह रूकती थी हाथ जोडकर
मलयानिल रूक जाता था
तुलसी की मंजरियों का
बोझिल मस्तक झुक जाता था

उसके चरणों में अर्पित
सूरज का नम्र प्रणाम था,
स्वप्निल चिंतन में उतराता
मेरा दिवस तमाम था।
बडे प्यार से उस बेटी को
पाला था मां-बाप ने
आंगन की तुलसी उखाड दी
जाने किस अभिशाप ने
उसका दर्द बांटने वाले
पिंजरे में विश्राम था,गौरैया के अरमानों का
वह आखिरी सलाम था।

उसकी खोज में बाग का पंछी
बना हुआ बनजारा है
जब से वह ससुराल गई
मेरा गांव कुँवारा है,
उसका प्यार लूटने वाला
हर प्रयत्न नाकाम था,
मुझे स्मरण दहला देता है
उस अंतिम शाम का।।

– स्व. पवन दीवान

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

युवा शक्ति का बजट: अंत्योदय का नया संकल्प

नई ऊर्जा, नया न्याय: युवाओं के हाथ, वंचितों का साथ

0 कर्तव्य भवन में तैयार किया गया पहला बजट, जो तीन कर्तव्यों से प्रेरित

पहला कर्तव्य है- उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाते हुए तथा उथल-पुथल भरी वैश्विक स्थिति के प्रति सहनीयता का निर्माण करके आर्थिक वृद्धि को तेज करना तथा इसे बनाए रखना।

दूसरा कर्तव्य है- लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना और उनके क्षमता का निर्माण करनाय भारत की समृद्धि के मार्ग में उन्हें मजबूत भागीदार बनाना।

तीसरा कर्तव्य है- सबका साथ-सबका विकास के विजन से जुड़ा है। यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक परिवार, समुदाय, क्षेत्र के पास संसाधनों, सुविधाओं तथा सार्थक भागीदारी के लिए अवसरों तक पहुंच की सुविधा हो।

- विदेशी क्लाउड सेवा प्रदाता को 2047 तक टैक्स हॉलीडे दिया जाएगा।
- अनुमान आधार पर टैक्स देने वाले सभी अप्रवासियों को न्यूनतम वैकल्पिक टैक्स से छूट।
- 17 औषधियों या दवाओं पर मूल सीमा शुल्क से छूट दी जाएगी।

केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में केंद्रीय बजट 2026-27 पेश करते हुए विकसित भारत की दिशा में सुधारों की गति को तेज करने हेतु तीन कर्तव्यों का प्रस्ताव किया। वित्त मंत्री ने कहा कि पहला कर्तव्य उत्पादकता एवं प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाकर तथा अस्थिर वैश्विक परि□श्य में सु□ढ़ता का निर्माण कर आर्थिक विकास की गति को तेज करना और उसे बनाए रखना है। उन्होंने कहा कि दूसरा कर्तव्य लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना और उनकी क्षमता का विकास कर भारत की समृद्धि की राह में उन्हें एक सशक्त साझेदार बनाना है। 'सबका साथ, सबका विकास' के कृष्टिकोण के अनुरूप तीसरा कर्तव्य सार्थक भागीदारी हेतु प्रत्येक परिवार, समुदाय, क्षेत्र एवं सेक्टर के लिए संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों को सुलभ बनाना है।

वित्त मंत्री ने कहा कि इस तीन-सूत्री दृष्टिकोण के लिये एक सहयोगी इकोसिस्टम की आवश्यकता है। पहली जरूरत संरचात्मक सुधारों - निरंतर, अनुकूल एवं भविष्योन्मुखी -की गति को बनाए रखना है। दूसरा, बचत को बढ़ावा देने, वित्त के कुशल आवंटन और जोखमों के प्रबंधन हेतु एक मजबूत एवं सुदृढ़ वित्तीय क्षेत्र अहम है। तीसरा, एआई के अनुप्रयोगों सहित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियां बेहतर शासन के गुणक के तौर कार्य कर सकती हैं। निर्मला सीतारमण ने कहा कि कर्तव्य भवन में तैयार किया गया यह पहला बजट युवा शक्ति पर आधारित एक ऐसा अनूठा बजट है, जो उन रचनात्मक विचारों से प्रेरित है जिन्हें विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026 के दौरान प्रधानमंत्री के साथ साझा किया गया था। वित्त मंत्री ने कहा कि पिछले 12 वर्षों के दौरान भारत की आर्थिक प्रगति की राह स्थिरता, राजकोषीय अनुशासन, सतत विकास और कम मुद्रास्फीति से प्रभावित रही है। सरकार ने सार्वजनिक निवेश पर मजबूत जोर को कायम रखते हुए दूरगामी संरचनात्मक सुधारों, राजकोषीय मितव्ययिता और मौद्रिक स्थिरता को निरंतर बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता को केंद्र में रखते हुए, सरकार ने घरेलू उत्पादन क्षमता एवं ऊर्जा सुरक्षा का निर्माण किया है और आयात पर निर्भरता में कमी लाई है। इसके साथ-साथ नागरिक-आधारित विकास को सुनिश्चित किया गया है और रोजगार सृजन, कृषिगत उत्पादकता, परिवारों की क्रय शक्ति और लोगों को सार्वभौमिक सेवाएं प्रदान करने हेतु विभिन्न सुधारों को अपनाया गया है। उन्होंने केहा कि इन उपायों ने लगभग सात प्रतिशत की उच्च वृद्धि दर सुनिश्चित की है और गरीबी घटाने एवं लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के हमारे उल्लेखनीय प्रयासों में मदद दी है।

निर्मला सीतारमण ने कहा कि एक ऐसे बाहरी वातावरण में जहां व्यापार तथा बहुपक्षवाद खतरे में है और संसाधनों की सुलभता एवं आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हुई हैं, नई प्रौद्योगिकियां पानी, ऊर्जा एवं दुर्लभ खनिजों की मांग तेजी से बढ़ाते हुए उत्पादन प्रणालियों में महत्वपूर्ण बदलाव ला रही हैं। भारत महत्वाकांक्षाओं एवं समावेशन के बीच संतुलन बिठाते हुए विकसित भारत की दिशा में आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ाना और अधिक निर्यात एवं स्थिर दीर्घकालिक निवेश को आकर्षित करते हुए वैश्विक बाजारों के साथ गहराई से जुड़ना जारी रखेगा। वित्त मंत्री ने सरकार के साथ –ढ़ता से खड़े होने और मिलकर दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की राह तैयार करने के लिए लोगों का आभार व्यक्त किया। आकांक्षाओं को उपलब्धियों में और क्षमताओं को प्रदर्शन में बदलने के सरकार के लक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए वित्तमंत्री ने कहा कि सरकार विकास के लाभों को प्रत्येक किसान, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, घुमंतू समुदाय, युवा, गरीब और महिला तक पहुंचाना सुनिश्चित कर रही है। वित्त मंत्री ने कहा कि रोजगार सृजन, उत्पादकता को बढ़ाने और विकास को गति देने की दिशा में व्यापक आर्थिक सुधार किये हैं। वर्ष 2025 में स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री की घोषणा के पश्चात, 350 से अधिक सुधारों को शुरू किया गया है। इसमें जीएसटी का सरलीकरण, श्रम संहिताओं को अधिसूचित करना तथा अनिवार्य गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों को युक्तिसंगत बनाना शामिल है। उच्चस्तरीय समितियां गठित की गई हैं और इसके साथ-साथ केंद्र सरकार, राज्य सरकारों के साथ मिलकर विनियमन हटाने तथा अनुपालन संबंधी अपेक्षाओं में कमी लाने की दिशा में काम कर रही है। सुधार एक्सप्रेस अपने मार्ग पर चल पडा है और यह हमारे कर्तव्य को पूरा करने में मदद के लिए अपनी गति बनाए रखेगा।

भारत के विकास इंजन के रूप में आईटी क्षेत्र को सहायता

भारत की विकास यात्रा में आईटी सेक्टर के महत्व को रेखांकित करते हुए बजट में सॉफ्टवेयर विकास सेवाओं, आईटी समर्पित सेवाओं, ज्ञान प्रक्रिया आउटसोर्सिंग सेवाओं और सॉफ्टवेयर विकास से संबंधित संविदागत अनुसंधान और विकास सेवाओं को उन पर लागू 15.5 प्रतिशत के एक समान सेफ हार्बर मार्जिन के साथ सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं की एकल श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित किए जाने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त, आईटी सेवाओं की एकल श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित किए जाने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त, आईटी सेवाओं के लिए सेफ हार्बर प्राप्त करने की सीमा को 300 करोड़ रुपये से पर्याप्त रुप से बढ़ाकर 2000 करोड़ रुपये किए जाने का प्रस्ताव है। आईटी सेवाओं के लिए सेफ हार्बर का अनुमोदन एक स्वचालित नियम आधारित प्रक्रिया द्वारा किया जाएगा और एक बार किसी आईटी कम्पनी द्वारा इसके लिए आवेदन करने पर कंपनी की इच्छानुसार इसी सेफ हार्बर को 5 वर्षों की अवधि के लिए जारी रखा जा सकता है। अग्रिम मूल्य निर्धारण करार (एपीए) करने की इच्छुक आईटी सेवा कंपनियों के लिए आईटी सेवाओं हेतु एकपक्षीय एपीए प्रक्रिया को तेज करने का प्रस्ताव किया गया है, जिसे दो वर्ष की अवधि के भीतर पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। करदाताओं के अनुरोध पर 2 वर्ष की अवधि को आगे 6 महीने के लिए बढ़ाया जा सकता है। एपीए में शामिल होने वाली कंपनी को उपलब्ध संशोधित विवरणी की सुविधा उसकी संबद्ध संस्थाओं को भी प्रदान किए जाने का प्रस्ताव है।

करदाताओं के लिए आसानी

निर्मला सीतारमण ने कहा कि छोटे करदाताओं के लिए एक योजना का प्रस्ताव किया जा रहा है, जिसमें नियम आधारित स्वचालित प्रक्रिया से कर निर्धारण अधिकारी के समक्ष आवेदन दाखिल करने के स्थान पर कम अथवा शून्य कटौती प्रमाणपत्र प्राप्त करना संभव हो सकेगा। उन्होंने कहा कि अलग-अलग कंपनियों में प्रतिभूतियां धारित करने वाले करदाताओं की सुविधा के लिए डिपोजिट्री, निवेशक के प्रपत्र 15जी अथवा प्रपत्र 15एच स्वीकार करने तथा इसे सीधे विभिन्न संबद्ध कंपनियों को उपलब्ध कराने का प्रस्ताव किया गया है। एक सांकेतिक शुल्क के भुगतान पर विवरणियों को संशोधित करने के लिए उपलब्ध समय को 31 दिसंबर से 31 मार्च तक बढ़ाने का प्रस्ताव किया गया है।

कर विवरणी के लिए आरामदायक समय-सीमा

वित्तमंत्री ने कहा कि कर विवरणियों को दाखिल करने के लिए अलग-अलग समय-सीमा रखने का प्रस्ताव किया जा रहा है। आईटीआर 1 और आईटीआर 2 विवरणियों वाले व्यक्तियों द्वारा इसे 31 जुलाई तक दाखिल करना जारी रहेगा और गैर लेखा परीक्षा व्यापार मामलों या नयासों को 31 अगस्त तक समय की अनुमति देने के लिए प्रस्ताव किया गया है। उन्होंने कहा कि किसी अनिवासी द्वारा अचल संपत्ति की बिक्री पर टीडीएस की कटौती किए जाने और टैन की आवश्यकता के बजाए निवासी क्रेता के पैन आधारित चालान के माध्यम से जमा किए जाने का प्रस्ताव किया गया है।

छोटे करदाताओं पर विशेष ध्यान

संसद में बजट पेश करते हुए वित्तमंत्री ने कहा कि छात्रों, युवा पेशेवरों, तकनीकी कर्मचारियों, अन्यत्र चले गए अनिवासी भारतीयों और ऐसे अन्य छोटे करदाताओं की व्यवहारिक समस्याओं को दूर करने के लिए, इन करदाताओं के लिए एक निश्चित आकार के नीचे आय अथवा परिसंपत्ति को प्रकट करने के लिए 6 माह की विदेशी परिसंपत्ति प्रकटीकरण योजना शुरू करने का प्रस्ताव किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि श्रेणी-बी के लिए परिसंपत्ति मूल्य 5 करोड़ रुपए तक करने का प्रस्ताव है। इसमें एक लाख रुपए के शुल्क के भुगतान पर दंड और अभियोजन दोनों से उन्मुक्ति होगी।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

बजट के मुख्य बिंदु

राजकोषीय समेकन

ऋण से जीडीपी अनुपात संशोधित अनुमान 2025-26 में जीडीपी के 56.1 प्रतिशत की तुलना में, बजट अनुमान 2026-27 में जीडीपी के 55.6 प्रतिशत रहने का अनुमान है। गिरता हुआ ऋण और जीडीपी अनुपात धीरे-धीरे ब्याज भुगतान पर व्यय को कम करके प्राथमिक क्षेत्र के व्यय के लिए संसाधनों को मुक्त करेगा। संशोधित अनुमान 2025-26 में, राजकोषीय घाटे का अनुमान जीडीपी के 4.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है जो 2025-26 के बजट अनुमान के बराबर है। ऋण समेकन की नई राजकोषीय दूरदर्शिता के अनुरूप, बजट अनुमान 2026-27 में राजकोषीय घाटा जीडीपी का 4.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

संशोधित अनुमान 2025-26

गैर-ऋण प्राप्तियों का संशोधित अनुमान 34 लाख करोड़ रुपये है। जिनमें से केंद्र की निवल कर प्राप्तियां 26.7 लाख करोड़ रुपये है। कुल व्यय का संशोधित अनुमान 49.6 लाख करोड़ रुपये है जिनमें से पूंजीगत व्यय लगभग 11 लाख करोड़ रुपये है।

बजट अनुमान 2026-27

वर्ष 2026-27 में गैर-ऋण प्राप्तियां और कुल व्यय का अनुमान क्रमशरू 36.5 लाख करोड़ रुपये और 53.5 लाख करोड़ रुपये है। केंद्र की निवल कर प्राप्तियों का अनुमान 28.7 लाख करोड़ रुपये है। राजकोषीय घाटे के वित्तपोषण हेतु, दिनांकित प्रतिभूतियों से निवल बाजार उधारी का अनुमान 11.7 लाख करोड़ रुपये है। शेष वित्तपोषण छोटी बचतों और अन्य स्रोतों से आने की संभावना है। सकल बाजार उधारी का अनुमान 17.2 लाख करोड़ रुपये है।

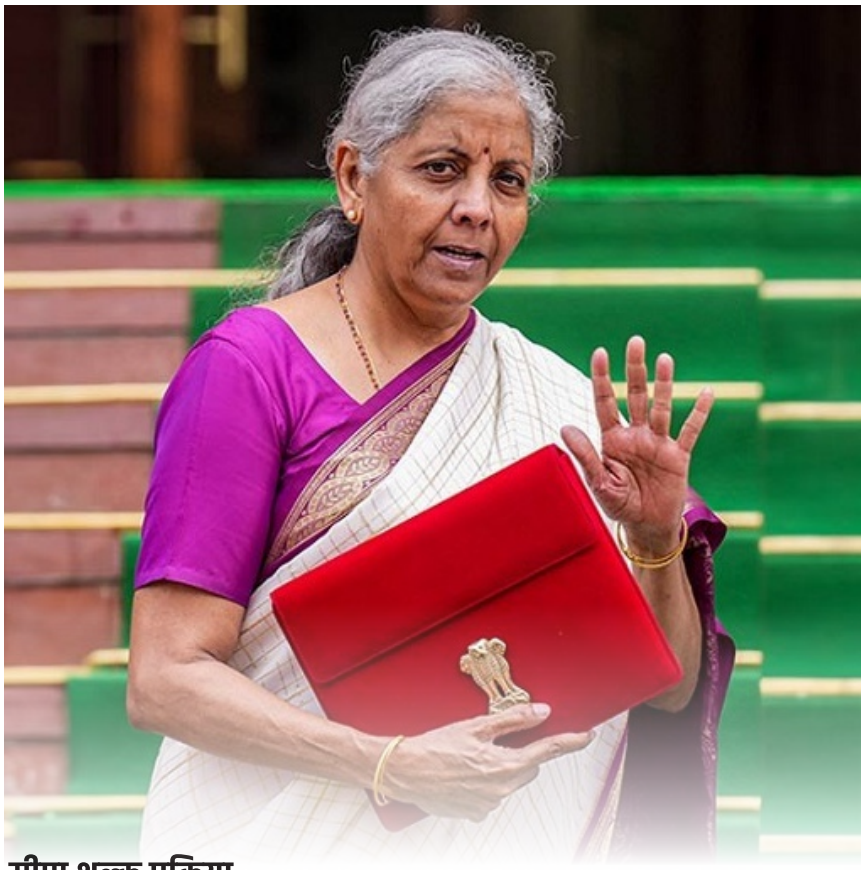

सीमा शुल्क प्रक्रिया

वस्तुओं के सुगम और त्वरित संचलन के लिए सीमा शुल्क प्रक्रियाओं में कम से कम हस्तक्षेप होगा। इसके अलावा टियर 2 और टियर 3 प्राधिकृत प्रचालकों जिन्हें एईओ कहा जाता है, के लिए शुल्क स्थगन अवधि को 15 दिन से बढ़ाकर 30 दिन किया जाएगा। पात्र विनिर्माताओं - आयातकों को भी यही सुविधा प्रदान की जाएगी। सीमा शुल्कों पर बाध्यकारी अग्रिम नियम की वैधता अवधि को वर्तमान 3 वर्ष से बढ़ाकर 5 वर्ष किये जाने का प्रस्ताव है। सरकारी एजेंसियों को उनके कार्गो के समाशोधन में अधिमान्य व्यवहार हेतु एईओ प्रत्यायन का लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। बजट में सीमा शुल्क भंडारण फ्रेमवर्क को स्व-प्रकटन, इलेक्ट्रॉनिक ट्रेकिंग और जोखिम आधारित लेखा परीक्षा के साथ भंडार संचालक - केंद्रित प्रणाली में बदला जाएगा।

डबल इंजन सरकार का बड़ा तोहफा : छत्तीसगढ़ में रेलवे विकास के लिए ₹7,470 करोड़

छत्तीसगढ़ में रेलवे अधोसंरचना विकास के लिए ₹7,470 करोड़ के ऐतिहासिक बजट प्रावधान किए जाने पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि डबल इंजन सरकार के सतत प्रयासों से छत्तीसगढ़ में आज रेलवे क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2009-14 के दौरान वार्षिक औसत ₹311 करोड़ की तुलना में 2026-27 में ₹7,470 करोड़ का बजट प्रावधान लगभग 24 गुना वृद्धि का रिकॉर्ड है। वर्तमान में राज्य में ₹51,080 करोड़ के रेल कार्य प्रगति पर हैं, जिनमें नए ट्रैक निर्माण, स्टेशनों का पुनर्विकास तथा सुरक्षा उन्नयन जैसे महत्वपूर्ण कार्य शामिल हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि सुदूर वनांचल बस्तर में जगदलपुर को जोड़ने वाले रावघाट-जगदलपुर रेल प्रोजेक्ट का प्रारंभ होना बस्तर के जनजातीय समाज के लिए केंद्र सरकार की ओर से एक अमूल्य उपहार है, जो क्षेत्रीय विकास की नई राह प्रशस्त करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि परमलकसा-खरसिया कॉरिडोर के साथ-साथ नए फ्रेट कॉरिडोर को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। इन परियोजनाओं से आने वाले समय में छत्तीसगढ़ में यात्री गाड़ियों की संख्या आने वाले समय में लगभग दोगुनी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि अमृत स्टेशन योजना के अंतर्गत राज्य के 32 रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है, जिनमें डोंगरगढ़ (फेज-I), अंबिकापुर, भानुप्रतापपुर, भिलाई और उरकुरा जैसे स्टेशन पूर्ण हो चुके हैं। इसके साथ ही राज्य में वंदे भारत एक्सप्रेस की 2 जोड़ी तथा अमृत भारत एक्सप्रेस की 1 जोड़ी सेवाएँ यात्रियों को तेज, सुरक्षित और आधुनिक रेल सुविधा प्रदान कर रही हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि वर्ष 2014 से अब तक लगभग 1,200 किलोमीटर नए रेल ट्रैक का निर्माण, 100 प्रतिशत विद्युतीकरण,

170 फ्लाईओवर/अंडरपास तथा 'कवच' जैसी आधुनिक सुरक्षा प्रणालियों की स्थापना से रेल सुविधा के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो रहा है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को इन युगांतकारी पहलों के लिए हृदय से धन्यवाद दिया है। उन्होंने कहा कि यह विकास केवल रेल पटरियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे प्रदेश के व्यापार, पर्यटन, उद्योग, रोजगार और आमजन के जीवन में नई ऊर्जा का संचार हो रहा है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

विकसित भारत की दिशा में निर्णायक कदम : समावेशी विकास का बजट

— चंद्रशेखर साहू, पूर्व कैबिनेट मंत्री

केंद्रीय बजट केवल आय-व्यय का लेखा-जोखा नहीं होता, बल्कि वह किसी भी राष्ट्र के भविष्य की दिशा और विकास के रोडमैप को स्पष्ट करता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत केंद्रीय बजट देश के समावेशी विकास की अवधारणा को मजबूती देने वाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के "विकसित भारत" के विजन को साकार करने की दिशा में यह बजट न केवल स्पष्ट दिशा प्रदान करता है, बल्कि एक ठोस कार्ययोजना के रूप में भी सामने आता है।

भारत की आत्मनिर्भरता की जड़ें गांवों में हैं। यह सर्वविदित सत्य है कि जब तक गांव आत्मनिर्भर नहीं होंगे, तब तक देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। इसी सोच को केंद्र में रखकर महात्मा गांधी ग्राम स्वराज योजना का शुभारंभ किया गया है। यह योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार, उत्पादन और स्वावलंबन को बढ़ावा देने की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगी। प्रधानमंत्री मोदी का संकल्प-आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत और समर्थ भारत-इस बजट में नए स्वरूप और नए कलेवर के साथ देशवासियों के सामने रखा गया है। लोकसभा में बजट भाषण के दौरान यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि इतने व्यापक लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया जाएगा। वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन जी ने अपने लगभग डेढ़ घंटे के सुस्पष्ट और तथ्यपरक भाषण में इन सभी प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया। इस बजट का सबसे सराहनीय पक्ष यह है कि इसमें स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। स्वास्थ्य, जो मनुष्य और समाज दोनों का सबसे बड़ा एजेंडा है, उसके लिए बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। विशेष रूप से दवाइयों को सस्ता करने की घोषणा न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र को मजबूती देगी, बल्कि आम नागरिकों के लिए यह एक बड़ी राहत साबित होगी। यह कदम सामाजिक न्याय और जनकल्याण की भावना को भी सशक्त करता है। इसी प्रकार शिक्षा क्षेत्र में की गई बढ़ोतरी भारत के प्रत्येक प्रदेश में शैक्षिक वातावरण को और अधिक मजबूत करेगी। बुनियादी शिक्षा से जुड़े प्रश्नों को इस बजट में स्पष्ट दिशा और नई गति मिली है। शिक्षा के पारंपरिक और आधुनिक-दोनों आयामों को ध्यान में रखते हुए किए गए प्रावधान आने वाले

समय में मानव संसाधन विकास को नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा और स्वास्थ्य, जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति के दो मूल स्तंभ हैं, इस बजट के केंद्र में रहे हैं। इनके सकारात्मक परिणाम आने वाले वर्षों में एक नए भारत के रूप में दिखाई देंगे। देश की अर्थव्यवस्था को तेज गति देने के लिए भी बजट में व्यापक प्रावधान किए गए हैं। विशेष रूप से तकनीकी क्षेत्र और नवाचार पर दिया गया जोर युवाओं की भागीदारी को बढ़ाने वाला है। टेक्नोलॉजी के माध्यम से रोजगार, कौशल विकास और उद्यमिता को बढ़ावा देने की घोषणाएं इस बात का संकेत हैं कि सरकार भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रही है। समग्र रूप से देखा जाए तो यह बजट युवाओं, कामगारों, किसानों और मध्यम वर्ग-सभी के लिए आशा और विश्वास का दस्तावेज है। यह न केवल आर्थिक संरक्षण प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक और मानवीय मूल्यों को भी मजबूती देता है। निश्चित रूप से यह बजट भारत को विकसित, आत्मनिर्भर और समर्थ राष्ट्र बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है।

जानें बजट में क्या सस्ता और क्या महंगा हुआ है

सस्ती हुई चीज़ें

- माइक्रोवेव ओवन के खास पार्ट्स पर अब बेसिक कस्टम ड्यूटी नहीं लगेगी।
- चमड़े के निर्यात में इस्तेमाल होने वाले कुछ खास इनपुट्स को ड्यूटी-फ्री आयात की सुविधा दी गई है।
- **BESS** (बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम) बनाने में इस्तेमाल होने वाले कैपिटल गुड्स पर कस्टम ड्यूटी माफ की गई है।
- सोलर ग्लास बनाने में इस्तेमाल होने वाले सोडियम एंटीमोनेट पर कस्टम ड्यूटी हटा दी गई है।

- न्यूक्लियर पावर प्रोजेक्ट्स के लिए आयात किए जाने वाले सामान पर 2035 तक कस्टम ड्यूटी नहीं लगेगी।
- एविएशन सेक्टर के पार्ट्स बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल पर कस्टम ड्यूटी माफ की गई है।
- विदेशी टूर पैकेज पर **TCS** की दर 5-20 प्रतिशत से घटाकर 2 प्रतिशत कर दी गई है।
- विदेश में पढ़ाई के खर्च पर **LRS** के तहत अब कम **TDS** लगेगा।
- जूते के ऊपरी हिस्से के निर्यात के लिए जरूरी सामान को ड्यूटी-फ्री आयात की अनुमति दी गई है।
- एनर्जी ट्रांजिशन से जुड़े उपकरणों पर बेसिक कस्टम ड्यूटी माफ की गई है।
- फ्रोजन टर्की मांस और खाने योग्य ऑफल पर टैरिफ 30 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है।
- आर्टेमिया सिस्ट और कैंसर की कुछ दवाओं पर टैरिफ 5 प्रतिशत से घटाकर शून्य कर दिया गया है।
- झींगा और श्रिम्प्स के चारे पर टैरिफ 15 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत किया गया है।
- बोने के लिए इस्तेमाल होने वाले बीज, फल पर टैरिफ 30 प्रतिशत से घटाकर 15 प्रतिशत किया गया है।
- मखाना, भुने हुए मेवे और बीजों पर टैरिफ 150 प्रतिशत से घटाकर 30 प्रतिशत कर दिया गया है।
- रेयर अर्थ मिनरल, स्कैंडियम और यट्रियम (मिश्रित या मिश्र धातु) पर टैरिफ 5 प्रतिशत से घटाकर 0 कर दिया गया है।

- मछुआरों द्वारा पकड़ी गई मछली पर अब कोई कस्टम ड्यूटी नहीं लगेगी।
- फॉस्फोरिक एसिड पर ड्यूटी 7.5 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दी गई है।

महंगी हुई चीज़ें

- इनकम टैक्स में गलत जानकारी देनारू टैक्स की रकम के 100 प्रतिशत के बराबर पेनल्टी।
- चल संपत्ति का खुलासा न करना : अब इस पर पेनल्टी लगेगी।
- स्टॉक ऑप्शन और फ्यूचर्स ट्रेडिंग : सिक्योरिटीज ट्रांजैक्शन टैक्स 0.02 प्रतिशत से बढ़ाकर 0.05 प्रतिशत किया गया।
- छाते और उनके पार्ट्स (जैसे ट्रिमिंग और एक्सेसरीज) पर अब 10 प्रतिशत या 25 रुपये प्रति किलो (जो भी जयादा हो) ड्यूटी लगेगी।
- फ्यूचर्स ट्रेडिंग पर **STT** अब 0.02 प्रतिशत से बढ़ाकर 0.05 प्रतिशत कर दिया गया है।
- शराब, मिनरल्स और स्क्रैप की बिक्री पर ज्बैअब 1 प्रतिशत से बढ़ाकर 2 प्रतिशत कर दिया गया है।
- छाते और उनके पार्ट्स के आयात पर अब फ्लोर इंपोर्ट प्राइस लागू किया गया है।
- क्रैनबेरी पर ड्यूटी 5 प्रतिशत और ब्लूबेरी पर 10 प्रतिशत कर दी गई है।
- पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड पर ड्यूटी अब शून्य से बढ़ाकर 7.5 प्रतिशत कर दी गई है।
- क्रैनबेरी से बने उत्पादों पर ड्यूटी बढ़ाकर 10 प्रतिशत कर दी गई है।
- रेफ्रिजरेटेड कंटेनरों पर ड्यूटी अब 5 प्रतिशत कर दी गई है।
- चबाने वाला तंबाकू, जर्दा और गुटखा पर **NCCD** 25 प्रतिशत से बढ़ाकर 60 प्रतिशत कर दिया गया है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

केंद्रीय बजट 2026-27: विकसित भारत की दिशा में ऐतिहासिक कदम

"मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने केंद्रीय बजट 2026-27 पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह बजट भारत के सुनहरे और विकसित भविष्य की दिशा में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। कर्तव्य भवन में बना हुआ यह पहला बजट है, जिसमें देश के समग्र विकास और प्रत्येक नागरिक के कल्याण को ध्यान में रखते हुए तीन प्रमुख कर्तव्यों-आर्थिक विकास एवं रोजगार वृद्धि, जनता की अपेक्षाओं की पूर्ति तथा 'सबका साथ, सबका विकास' को केंद्र में रखा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत यह बजट गरीब, किसान, युवा, महिला, मध्यम वर्ग और श्रमिक वर्ग के उत्थान के लिए मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों को इस बजट का सीधा लाभ मिलेगा।"

कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती

बजट में किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। एआई और आधुनिक तकनीक के माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने, पशुपालन एवं डेयरी उद्योग को प्रोत्साहन देने की योजना बनाई गई है। साथ ही महात्मा गांधी ग्राम स्वराज पहल के तहत स्थानीय उद्योग और हस्तशिल्प को बढ़ावा देकर ग्रामीणों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बजट में युवाओं के लिए रोजगार सृजन पर विशेष जोर दिया गया है। स्टार्टअप, एमएसएमई, मैन्युफैक्चरिंग और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा होंगे। पर्यटन को बढ़ावा देने से स्थानीय आर्थिक विकास को गति मिलेगी और युवाओं को अपने ही क्षेत्र में रोजगार मिलेगा। विदेश यात्रा और विदेशों में पढ़ाई भी पहले की तुलना में सस्ती होगी।

स्वास्थ्य क्षेत्र में ऐतिहासिक पहल

स्वास्थ्य क्षेत्र को लेकर बजट को ऐतिहासिक बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि बायोफार्मा सेक्टर के लिए 10 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिससे कैंसर, डायबिटीज सहित अन्य गंभीर बीमारियों की दवाइयां सस्ती होंगी। जिला अस्पतालों के उन्नयन, हर जिले में इमरजेंसी एवं ट्रॉमा सेंटर की स्थापना, मानसिक स्वास्थ्य और आयुर्वेदिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के साथ-साथ मेडिकल टूरिज्म के लिए राज्यों में पांच रीजनल हब स्थापित किए जाएंगे। इससे छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर बेहतर होगा और रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे।

महिला सशक्तिकरण को नई दिशा

लखपति दीदी योजना के विस्तार के माध्यम से महिलाओं को क्रेडिट-लिंक्ड स्वरोजगार, उद्यमिता और स्थानीय बाजार से जोड़ने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा हर जिले में बालिकाओं के लिए छात्रावास निर्माण की घोषणा से उन्हें उच्च शिक्षा में सहायता मिलेगी।

उद्योग, शिक्षा और खेल को बढ़ावा

देश की आर्थिक मजबूती के लिए 7 हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर, 20 नए जलमार्ग, बड़े टेक्सटाइल पार्क और 4 राज्यों में खनिज कॉरिडोर की घोषणा की गई है। सेमीकंडक्टर मिशन के लिए 40 हजार करोड़ रुपये के निवेश से औद्योगिक विकास और रोजगार को नई गति मिलेगी। वहीं खेलो इंडिया मिशन और शिक्षा क्षेत्र में सुधारों से बच्चों और युवाओं को बेहतर अवसर मिलेंगे।

कर सुधार और आम जनता को राहत

आयकर प्रक्रिया को सरल बनाया गया है और छोटे करदाताओं के लिए आसान व्यवस्था की गई है। दवाइयां, कपड़े, जूते, मोबाइल, ईवी बैटरी, सोलर उपकरण, बायोगैस-सीएनजी सहित कई रोजमर्रा की वस्तुएं सस्ती होंगी, जिससे आम जनता को सीधी राहत मिलेगी। अंत में मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्रीय बजट 2026-27 'सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास' की भावना को और मजबूत करता है। यह बजट छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में समावेशी विकास सुनिश्चित करेगा। उन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को इस ऐतिहासिक, विकासशील और जनकल्याणकारी बजट के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

घने जंगलों से झरनों तक: छत्तीसगढ़ का पर्यटन वैभव

प्रकृति, संस्कृति और रोमांच का अनछुआ संसार

पर्यटन मानचित्र पर उभरता छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ में विशाल वन, नैसर्गिक जलप्रपात और ऐतिहासिक, पुरातत्विक तथा धार्मिक महत्व अनेक स्थल हैं। राज्य सरकार द्वारा पर्यटकों की दृष्टि से स्थलों का सौंदर्यीकरण और सुविधाओं का तेजी से विस्तार किया जा रहा है। राज्य सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया है। इसके अलावा वनांचल में ईको-टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए अनेक रिसार्ट और होटल की श्रृंखला विकसित की जा रही है। वन क्षेत्रों में स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाने के लिए होम स्टे पॉलिसी भी तैयार की गई है।

पर्यटन नीति

पर्यटकों को आकर्षक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार द्वारा पर्यटन नीति भी तैयार की गई है। इस नीति में पर्यटन स्थलों में आधुनिक और विकसित सुविधाओं के लिए निवेश करने वाले उद्यमियों को अनेक प्रकार से सुविधाएं भी दी जा रही हैं। विशेषतौर पर बस्तर अंचल में पर्यटन, सुविधाओं के विस्तार के लिए टूरिज्म सर्किट भी विकसित किया जा रहा है। इसके माध्यम से बस्तर अंचल के पर्यटन स्थलों में बेहतर कनेक्टिविटी विकसित होगी। पर्यटन नीति में ईको-टूरिज्म, एथनिक (आदिवासी), एडवेंचर और वेलनेस टूरिज्म को प्राथमिकता दी गई है। छत्तीसगढ़ की पर्यटन संभावनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए डिजीटल प्लेटफार्म का भी उपयोग किया जा रहा है। धुड़मारास को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने 60 देशों के 20 पर्यटन गांवों में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव उन्नयन कार्यक्रम के लिए चुना है। भारत सरकार ने इस गांव को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के पुरस्कार से सम्मानित किया है। जशपुर जिले के मयाली गांव से 35 किमी दूर स्थित मधेश्वर पहाड़ को 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में विश्व के सबसे बड़े प्राकृतिक शिवलिंग के रूप में दर्ज किया गया है, जिससे छत्तीसगढ़ पर्यटन को नई पहचान मिली है। मधेश्वर पहाड़ न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह पर्वतारोहण और एडवेंचर स्पोर्टस के लिए भी लोकप्रिय होता जा रहा है। हर साल यहां बड़ी संख्या में पर्यटक आते है, प्रकृति के साथ जुड़ने का अनुभव करते हैं। केंद्र सरकार से 10 करोड़ रूपए की राशि प्राप्त हुई है, जो विशेष रूप से मधेश्वर महादेव धाम और पहाड़ के धार्मिक एवं पर्यटन क्षेत्र के विकास में खर्च की जा रही है।

धार्मिक पर्यटन स्थल

पैरी, सोंढूर और महानदी के संगम पर बसा राजिम को इसके धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के कारण छत्तीसगढ़ का प्रयागराज कहा जाता है। यहां 8वी सदी का राजीव लोचन मंदिर प्रसिद्ध है। यहां कुंभ कल्प के आयोजन होने के कारण देश विदेश में राजिम प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ प्रभु श्रीराम का ननीहाल भी है। चंदखुरी में माता कौशल्या मंदिर भी है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शिवनी नारायण में माता शबरी का मंदिर भी है जहां प्रभु श्रीराम ने माता शबरी से मीठे बेर खाए थे। डोंगरगढ़ की बम्लेश्वरी, रतनपुर की महामाया, धमतरी की बिलाई माता, चन्द्रपुर की चन्द्रहासिनी मंदिर धार्मिक पर्यटन के लिए मशहूर हैं।

ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल

बौद्ध ग्रंथों के अनुसार प्रसिद्ध चीनी यात्री ने सिरपुर की यात्रा की थी और यहां बौद्ध विहार और स्तुप देखे थे। आज भी यहां पुरातात्विक अवशेष देखे जा सकते हैं। यह भी मान्यता है कि भगवान बुद्ध ने यहां उपदेश दिया था। तत्कालीन समय सिरपुर एक बड़ा व्यापारिक केंद्र था। इसके अलावा यह स्थान शैव-वैष्णव और बौद्ध धर्म का संगम स्थल है। कबीरधाम जिले का भोरमदेव शिव मंदिर के लिए विख्यात है। इस मंदिर में खजुराहो की शिल्पकला के दर्शन होते हैं। यह मंदिर 11वीं सदी में बनाया गया है। कुटुम्बसर की गुफा भी दर्शनीय है। यहां अंधी मछलियां, स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट

संरचना पायी जाती है। सिंघनपुर की की गुफा में आदिमानव के शैल चित्र और रामगढ़ की गुफाओं में भारत की प्राचीनतम नाट्यशालाओं के अवशेष मिलते है।

युवाओं ने की ऑफ-रोड, एटीवी और पैरामोटर की शानदार राइड

युवाओं को साहसिक पर्यटन से जोड़ने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड ने छत्तीसगढ़ राज्य की रजत जयंती वर्ष पर सैला टूरिस्ट रिसोर्ट मैनपाट में विशेष पर्यटन एवं एडवेंचर गतिविधि का कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बाइक राइडिंग से लेकर पैरामोटर राइड तक रोमांचक अनुभवों की श्रृंखला रही। कार्यक्रम के माध्यम से सैला क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता, एडवेंचर के अनुकूल वातावरण और सुरक्षित राइडिंग के संदेश को प्रमुखता से सामने लाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को साहसिक पर्यटन से जोड़ते हुए प्रदेश में एडवेंचर टूरिज्म की संभावनाओं को बढ़ावा देना रहा, ताकि छत्तीसगढ़ को रोमांच प्रेमियों के नए गंतव्य के रूप में पहचान मिल सके।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

"मैंने खुद से खुद को जन्म दिया"

तिरस्कार से सम्मान तक : ट्रांसजेंडर अधिकारों की लड़ाई का चेहरा बनीं विद्या राजपूत

समाज की भीड़ में कई चेहरे ऐसे होते हैं, जो दिखाई तो देते हैं, लेकिन समझे बहुत कम जाते हैं। कुछ लोग इस उपेक्षा के साथ जी लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो उसी उपेक्षा को अपनी ताकत बना लेते हैं और इतिहास लिखते हैं। विद्या राजपूत ऐसी ही एक शख्सियत हैं एक नाम, जो संघर्ष, साहस, स्वाभिमान और सामाजिक परिवर्तन का पर्याय बन चुका है। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से उठी यह आवाज आज देश-विदेश तक सुनी जाती है। वे कहती हैं "जब लोग मुझे अजीब नजरों से देखते हैं, तो मेरे अंदर की आग और भड़क उठती है। मुझे लगता है कि मुझे और मजबूत बनना है।

एक जन्म, जिसे समाज ने स्वीकार नहीं किया

1 मई 1977 को छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले के एक साधारण परिवार में बच्चे के जन्म की खुशियां मनाई गईं। परिवार ने बेटे के रूप में उसे अपनाया और नाम रखा गया विकाश सिंह राजपूत। लेकिन समय के साथ यह स्पष्ट होने लगा कि यह बच्चा समाज की पारंपरिक पारंपरिक अपेक्षाओं से अलग है। बचपन से ही स्वभाव, रुचियां और व्यवहार स्त्रीत्व की ओर झुके हुए थे। यह भिन्नता समाज को स्वीकार नहीं थी। स्कूल उनके लिए शिक्षा का मंदिर नहीं, बल्कि अपमान का मैदान बन गया। सहपाठी उपहास करते, ताने मारते, हिंसा तक करते। वे याद करती हैं "मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात की होती थी कि लोग मुझे समझने की कोशिश ही नहीं करते थे।

अपेक्षाओं का भार और टूटता बचपन

छह भाई-बहनों में सबसे छोटी होने के बावजूद उन्हें बेरहमी से प्रताड़ना झेलनी पड़ी।

सहपाठी ताने देते—

"लड़की हो या लड़का? दिखाओ..."

घर में भी तिरस्कार मिलता—

"मर्द बनो... मर्द बनो..."

यह 1990 का दशक था। समाज में ट्रांसजेंडर पहचान को लेकर जागरूकता लगभग नहीं थी। फिल्मों में भी केवल रूढ़ छवि दिखाई जाती थी। धीरे-धीरे उन्होंने लोगों से बात करना छोड़ दिया। घर और समाज दोनों जगह अकेलापन उनका साथी बन गया।

जब घर भी सुरक्षित नहीं रहा

समाज का दबाव इतना बढ़ गया कि परिवार भी उन्हें समझ नहीं सका। पहचान का संकट, अपमान और अकेलापन यह सब उनके जीवन का हिस्सा बन चुका था। 1998 में उन्होंने एक बड़ा निर्णय लिया गांव छोड़कर रायपुर आने का। यह निर्णय केवल शहर बदलने का नहीं था, बल्कि अपने अस्तित्व की तलाश का पहला कदम था।

संघर्ष के बीच मिली दिशा

रायपुर में जीवन आसान नहीं था। छोटे-मोटे काम करके उन्होंने जीवनयापन शुरू किया। 21 वर्ष की उम्र में एक छोटे होटल के फ्रंट ऑफिस में काम करते हुए उनकी मुलाकात ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों से हुई। पहली बार उन्हें लगा वे अकेली नहीं हैं। उन्होंने देखा कि यह पूरा समुदाय गरीबी, हिंसा, स्वास्थ्य समस्याओं और सम्मान के अभाव के बीच जी रहा है। एचआईवी एक बड़ी चुनौती थी। उसी समय उन्होंने तय किया वे केवल अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे समुदाय के लिए काम करेंगी।

सेवा से आंदोलन तक

उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण समिति के साथ अपने सामाजिक कार्य की शुरुआत की और बाद में राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (NACO) से जुड़ीं।

समुदाय में स्वास्थ्य जागरूकता, एचआईवी रोकथाम और अधिकारों के लिए उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। लोग उनसे जुड़ते गए, और यह जुड़ाव धीरे-धीरे आंदोलन बन गया। 2009 में उन्होंने "मितवा संकल्प समिति" की स्थापना की, जो आज ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के लिए एक मजबूत मंच है।

पहचान पाने की कठिन यात्रा

एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिए अपनी पहचान स्वीकार करना ही कठिन नहीं होता, बल्कि उसे जी पाना और भी कठिन होता है। आर्थिक संघर्ष और सामाजिक बाधाओं के बीच विद्या ने लिंग परिवर्तन की प्रक्रिया पूरी की। वे कहती हैं "उस दिन मुझे लगा कि मैं अपने आप से मिली हूं... जैसे मैंने खुद से खुद को जन्म दिया।" यह केवल शारीरिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान की पुनर्प्राप्ति थी।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

जब संघर्ष नीति बना

विद्या राजपूत के अथक प्रयासों से छत्तीसगढ़ में ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए कई ऐतिहासिक पहलें संभव हुईं—

- ट्रांसजेंडर कल्याण बोर्ड की स्थापना
- गरिमा गृह आश्रय केंद्र
- सरकारी योजनाओं तक पहुंच
- पुलिस विभाग में ट्रांसजेंडर भर्ती
- बसरकारी आवास योजनाओं में आरक्षण
- कौशल प्रशिक्षण और शिक्षा कार्यक्रम
- लिंग परिवर्तन सर्जरी के लिए सहायता

वे गर्व से कहती हैं—

"पुलिस में भर्ती होने वालों में से किसी ने भी अपनी नौकरी नहीं छोड़ी है।"

एक ट्रांसजेंडर पुलिस अधिकारी को काम करते देखना उनके लिए गर्व का क्षण होता है।

"जिन लोगों को कभी इंसान भी नहीं समझा जाता था, उन्हें अनुशासन लागू करते देखना मुझे गर्व से भर देता है।"

दरवाजे जो अब भी बंद हैं

सम्मान और पहचान मिलने के बाद भी संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है।

47 वर्षीय विद्या आज भी रोजगार के अवसर तलाशने के लिए मॉल, बिजनेस पार्क और कंपनियों के चक्कर लगाती हैं।

कई बार उन्हें गेट पर ही रोक दिया जाता है।

कुछ लोग हंसते हैं, कुछ हैरान होते हैं— जैसे पूछ रहे हों,

"ये यहां क्यों आई हैं?"

लेकिन यही तिरस्कार उनके संकल्प को और मजबूत करता है।

स्वीकृति की लड़ाई

वे संस्थानों और कंपनियों को समझाती हैं कि ट्रांसजेंडर समुदाय को नौकरी की आवश्यकता क्यों है। "मैं उन्हें बताती हूं कि इस समुदाय के पास परिवार का सहारा नहीं होता। मैं उनकी शिक्षा, कौशल और अनुभव के बारे में जानकारी देती हूं," वे बताती हैं। उन्होंने BALCO, वेदांता, टाटा स्टील जैसी कंपनियों और कई सरकारी संस्थानों को ट्रांसजेंडर रोजगार के लिए प्रेरित किया है।

2019 के ट्रांसजेंडर कानून और 2014 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के आधार पर वे अपनी मांगों को लेकर दिल्ली के केंद्रीय सचिवालय तक पहुंचीं। जीवन भर के अकेलेपन के बाद उन्हें अपने साथी देव के रूप में प्रेम और स्वीकृति मिली। वे कहती हैं "अब मुझे सुकून मिलता है... कोई मेरा इंतजार करता है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान

विद्या राजपूत की पहचान अब केवल छत्तीसगढ़ तक सीमित नहीं रही—

- राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर परिषद की सदस्य हैं।
- अमेरिका के **International Visitor Leadership Program** में विशेष आमंत्रण ।
- कमला भसीन पुरस्कार से सम्मानित ।
- 2022 में पंडित रविशंकर शुक्ल राज्य अलंकरण सम्मान, छत्तीसगढ़ शासन ।

समाज में बदलाव की शुरुआत: उनके प्रयासों के परिणाम व्यापक रहे—

- खेलो इंडिया में ट्रांसजेंडर खिलाड़ियों की भागीदारी
- संस्कृति मंत्रालय द्वारा ट्रांसजेंडर कलाकारों की मान्यता
- पाठ्यपुस्तकों में ट्रांसजेंडर इतिहास
- शिक्षकों के लिए संवेदनशीलता प्रशिक्षण
- 2019 में रायपुर के पहले प्राइड मार्च के वर्ष ही उन्होंने 15 ट्रांसजेंडर महिलाओं का विवाह आयोजित कराया, यह संदेश देने के लिए कि प्यार हर व्यक्ति का अधिकार है।

एक मिसाल, एक आंदोलन

विद्या राजपूत की कहानी केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। यह उस समाज की कहानी है जो धीरे-धीरे बदल रहा है। यह कहानी हमें सिखाती है, पहचान छीनने से खत्म नहीं होती, सम्मान संघर्ष से हासिल होता है, बदलाव एक व्यक्ति से भी शुरू हो सकता है। अंतिम शब्द विद्या राजपूत केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक आंदोलन हैं। उन्होंने साबित किया है कि अगर इंसान अपने सच को स्वीकार कर ले, तो दुनिया की कोई ताकत उसे रोक नहीं सकती। उनकी कहानी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, संघर्ष करने वाला इंसान इतिहास लिख सकता है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

राजिम कुंभ कल्प 2026

धर्म, आस्था और संस्कृति का त्रिवेणी संगम

12 ज्योतिर्लिंग और पंचकोशी धाम थीम पर आधारित कुंभ

0 राजिम कुंभ कल्प मेला का भव्य शुभारंभ, राज्यपाल रमेन डेका मुख्य अतिथि के रूप में हुए शामिल

त्रिवेणी संगम राजिम के पावन तट पर नवीन मेला मैदान राजिम में आयोजित राजिम कुंभ कल्प मेला के शुभारंभ अवसर पर छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि राजिम की यह पावन भूमि, जहां महानदी, पैरी और सोंढूर नदियों का संगम होता है, अत्यंत पुण्य और ऐतिहासिक महत्व रखती है। उन्होंने कहा कि इस पवित्र स्थल पर आयोजित मेला जिसे श्रद्धालु 'कल्प कुंभ' के नाम से जानते हैं, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर का प्रतीक है।

राज्यपाल रमेन डेका ने कहा कि राजिम कुंभ कल्प के अवसर पर आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का अनुभव हो रहा है। मुझे छत्तीसगढ़ की पवित्र नगरी राजिम के कुंभ मेला में आकर अत्यंत शांति महसूस होती है। धर्म, आस्था और संस्कृति के इस संगम राजिम कुंभ मेले में देश के विभिन्न प्रांतों से आए साधु-संतों, श्रद्धालुजनों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं। मैं कुलेश्वर महादेव तथा राजीव लोचन भगवान, राजिम भक्तिन माता से प्रार्थना करता हूं कि हमारे देश और प्रदेश पर अपना आशीर्वाद बनाये रखें जिससे यहां हमेशा सुख-शांति और खुशहाली कायम रहे।

राजिम छत्तीसगढ़ की आस्था का प्रतीक

राज्यपाल ने कहा कि राजिम माघी पुन्नी मेला छत्तीसगढ़ की आस्था का प्रतीक है। यह एक ऐसा पावन आयोजन है जिसमें छत्तीसगढ़ के लोगों के साथ-साथ देश भर के विभिन्न भागों से भी श्रद्धालुओं का आगमन होता है। राजिम प्राचीन समय से ही शैव और वैष्णव धर्म के केंद्र के रूप में विख्यात एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। यहां राजीवलोचन मंदिर में भगवान विष्णु चतुर्भुज स्वरूप में विराजमान है। यहां भगवान शिव कुलेश्वर महादेव के रूप में विराजमान हैं।

राज्यपाल रमेन डेका ने कहा कि राजिम कुंभ कल्प के अवसर पर आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का अनुभव हो रहा है। मुझे छत्तीसगढ़ की पवित्र नगरी राजिम के कुंभ मेला में आकर अत्यंत शांति महसूस होती है। धर्म, आस्था और संस्कृति के इस संगम राजिम कुंभ मेले में देश के विभिन्न प्रांतों से आए साधु-संतों, श्रद्धालुजनों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं। मैं कुलेश्वर महादेव तथा राजीव लोचन भगवान, राजिम भक्तिन माता से प्रार्थना करता हूं कि हमारे देश और प्रदेश पर अपना आशीर्वाद बनाये रखें जिससे यहां हमेशा सुख-शांति और खुशहाली कायम रहे।

पंचकोशी यात्रा विश्व प्रसिद्ध

राज्यपाल डेका ने कहा कि कुलेश्वरनाथ महादेव, पटेश्वर नाथमहादेव, चंपेश्वर नाथ महादेव, ब्रम्हकेश्वर नाथ, फनीकेश्वर नाथ महादेव, करपूरेश्वर महादेव की पंचकोशी यात्रा विश्व प्रसिद्ध है। प्राचीन मंदिरों की बहुलता राजिम को पुरातात्विक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता प्रदान करती हैं। इन मंदिरों में मूर्ति कला के गौरवशाली इतिहास के दर्शन होते हैं। शास्त्रों में माघ के माह पुण्य माह माना गया है। माघ माह के इस पावन अवधि में सदियों से ही पवित्र नदियों एवं त्रिवेणी संगमों में पुण्य

स्नान की परंपरा रही है। इस माह छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों में मेले का आयोजन की प्राचीन परंपरा रही है। मेलों का विशेष सामाजिक और सामुदायिक महत्व है। इनमें विभिन्न सांस्कृतिक का मिलन होता है। इनके माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी परंपराओं से परिचित होने का अवसर मिलता है। आज यहां राजिम मेले में पधारे समस्त संतों, विद्वानों और धर्मगुरूओ को प्रणाम करता हूं। भारत साधु संतों की भूमि रही है। कहा जाता है जब किसी स्थान पर साधु संतों के चरण पड़ते हैं तो वह स्थान पवित्र हो जाता है। संतों के दिखाये मार्ग पर चलने से ज्ञान की प्राप्ति होती है और जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है। जहां संतों का सम्मान होता है वहां सुख समृद्धि, शांति और खुशहाली रहती है। उनका जीवन सदैव परोपकार के लिए समर्पित रहता है। संतों के समागम से हम एक बेहतर मनुष्य बनते हैं।

अद्भुत आयोजनों से पर्यटकों को भी विशेष आनंद

राजिम कुंभ मेला जैसे अद्भुत आयोजनों से पर्यटकों को भी विशेष आनंद आता हैं। मेले में कलाकारों का संगम, श्रद्धालुओं की अनगिनत आस्था और संतों के आशीर्वाद से राजिम मेले ने देश में अपनी विशेष पहचान बनाई है। आधुनिक युग में हमें अपनी कला, साहित्य और सांस्कृतिक को आरक्षित और उन्नत करने की आवश्यकता है।हमें इस प्रकार के कला, सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों के लिए अपने प्रयासों को बढ़ाने की आवश्यकता है, जिससे छत्तीसगढ़ पर्यटन मानचित्र में और उभर कर सामने आ सके। मुझे यह देखकर विशेष प्रसन्नता हो रही है कि छत्तीसगढ़ शासन द्वारा इस कुंभ को स्वच्छता, सुरक्षा और आधुनिक सुविधाओं के साथ भव्य रूप में आयोजित किया जाता है। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिक चेतना को जागृत करेगा, बल्कि पर्यटन, लोक सांस्कृतिक को भी नई दिशा देगा। हमारे पूर्वजों ने नदियों, सरोवरों और वृक्षों की महत्ता और उनके संरक्षण पर विशेष बल दिया। आज

आवश्यकता है कि हम अपने पूर्वजों द्वारा दिखाए राह पर चलें और अपने प्राकृतिक वातावरण को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाए रखें, नए पौधों का रोपण करें और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें। हम सभी माइक्रो प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के प्रति जागरूक बनें तथा इसकी रोकथाम के उपाय करें। मैं इस पवित्र मेले में पधारे सभी साधु-संतों, धार्मिक गुरूओं का पुनः स्वागत करता हूं और कामना करता हूं कि राजिम कुंभ कल्प 2026 का आयोजन छत्तीसगढ़ को आध्यात्मिक मानचित्र पर और अधिक सशक्त रूप से स्थापित करें।

राजिम कुंभ ने बनाई विश्व स्तर पर पहचान

सांस्कृतिक एवं पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल ने भगवान श्री राजीवलोचन एवं कुलेश्वर महादेव को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और कहा कि राजिम कुंभ कल्प पर्व हमारी सांस्कृतिकउत्सव परंपरा और लोक सांस्कृतिक का जीवंत उत्सव है, जो समाज के मूल्यों को और अधिक प्रगाढ़ बनाता है। मंत्री अग्रवाल ने कहा कि छत्तीसगढ़

की सांस्कृतिक और परंपराएं आज विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बना रही हैं। अपने स्थानीय परंपरा का सम्मान करना अत्यंत जरूरी है। आप सबके सहयोग से कुंभ कल्प पर्व सफल होगा। संभाग आयुक्त महादेव कावरे ने स्वागत भाषण में कहा कि त्रिवेणी संगम केवल नदियों की धाराओं का संगम नहीं, बल्कि आस्था, विश्वास और सनातन सांस्कृतिक का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि राजिम कुंभ कल्प मेला मात्र एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि यह सामाजिक समरसता, एकता का संदेश देता है। संत राजीव लोचन महाराज ने कहा कि वर्ष 2006 से छत्तीसगढ़ के प्रयाग के रूप में पहचान बना चुके राजिम कुंभ कल्प मेला की यह पावन श्रृंखला वर्ष 2026 में पहुंची चुकी है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा आयोजित राजिम कुंभ कल्प मेला आज पूरे देश को जोड़ने का कार्य कर रहा है और यह आयोजन भव्यता एवं दिव्यता के साथ निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

12 ज्योतिर्लिंग और पंचकोशी धाम थीम पर आधारित कुंभ

इस वर्ष राजिम कुंभ कल्प मेले का स्वरूप विशेष रूप से आकर्षक है। मेले की थीम बारह ज्योतिर्लिंग एवं पंचकोशी धाम पर आधारित रखी गई है, जो श्रद्धालुओं को भारतीय सनातन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का भव्य अनुभव कराएगी। मेले के दौरान धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन, संत समागम एवं आध्यात्मिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। देशभर से साधु-संत, कथा वाचक और श्रद्धालु इस कुंभ कल्प में शामिल होंगे।

चार धाम यात्रा के साथ 12 ज्योतिर्लिंग के दिव्य दर्शन

राजिम कुंभ कल्प मेला में श्रद्धालुओं के लिए आस्था और भक्ति का अद्भुत संगम साकार हुआ है। महानदी आरती घाट स्थित लक्ष्मण झूला से लेकर नवीन मेला मैदान तक के कनेक्टिंग रोड पर भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग स्थापित किए गए हैं, जहां श्रद्धालु एक ही स्थान पर देशभर के पवित्र ज्योतिर्लिंगों के दर्शन कर पा रहे हैं। यहां स्थापित द्वादश ज्योतिर्लिंग भारत के सबसे प्राचीन एवं पवित्र स्वयंभू शिवलिंगों का प्रतीक हैं। इनमें सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), महाकालेश्वर (उज्जैन), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), बैद्यनाथ (झारखंड), भीमाशंकर (महाराष्ट्र), रामेश्वरम (तमिलनाडु), नागेश्वर (गुजरात), काशी विश्वनाथ (वाराणसी), त्र्यंबकेश्वर (नासिक), केदारनाथ (उत्तराखंड) और घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र) शामिल हैं। ये सभी ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के विभिन्न स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सामान्यतः इन सभी ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए देशभर की लंबी और खर्चीली यात्रा करनी पड़ती है, लेकिन राजिम कुंभ कल्प पर्व में राज्य शासन के विशेष प्रयासों से इनका स्वरूप एक ही जगह पर साकार कर दिया गया है। इससे श्रद्धालुओं को कम समय में सहज और सुलभ रूप से द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का पुण्य लाभ मिल रहा है। प्रत्येक ज्योतिर्लिंग के साथ संबंधित मंदिरों का सजीव चित्रण किया गया है, जिससे श्रद्धालुओं को वहां की धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभूति भी प्राप्त हो रही है। इसके अतिरिक्त नवीन मेला मैदान स्थित घाट पर भगवान शिव की 22 फीट ऊंची भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है, जो दूर से ही श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रही है और मेले का मुख्य आकर्षण बनी हुई है।

भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग और उनकी विशेषताएं-

1. सोमनाथ (गुजरात)
पहला ज्योतिर्लिंग, जहां चंद्रदेव ने भगवान शिव की आराधना की थी।

2. मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश)
मान्यता है कि यहां शिव-पार्वती दोनों का वास है, इसे शक्तिपीठ भी माना जाता है।

3. महाकालेश्वर (उज्जैन)
12 ज्योतिर्लिंग में यह एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है, इस मंदिर की भस्म आरती प्रसिद्ध है।

4. ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश)
यह मंदिर ओंकार पर्वत पर स्थित है, जिसका आकार "ॐ" जैसा है।

5. केदारनाथ (उत्तराखंड)
हिमालय की गोद में यह मंदिर पांडवों द्वारा निर्मित है, यह चारधाम का भाग भी है।

6. भीमाशंकर (महाराष्ट्र)
सह्याद्री पर्वत में स्थित यह मंदिर भीमासुर वध की कथा से जुड़ा है।

7. काशी विश्वनाथ (उत्तर प्रदेश)
वाराणसी स्थित इस मंदिर को मोक्षदायिनी और शिव का दिव्य धाम माना जाता है।

8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)
नासिक में स्थित यह मंदिर गोदावरी नदी का उद्गम स्थल है।

9. बैजनाथ (झारखंड)
देवघर का बैजनाथ धाम रावण द्वारा शिव की आराधना से जुड़ा है।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग (गुजरात)
द्वारका के निकट स्थित इस मंदिर को नाग से रक्षा का प्रतीक माना जाता है।

11. रामेश्वरम (तमिलनाडु)
भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित इस मंदिर में 22 तीर्थ कुंड है।

12. घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र)
औरंगाबाद के एलोरा गुफाओं के पास यह मंदिर बारहवां एवं अंतिम ज्योतिर्लिंग है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

श्रद्धालुओं में दिख रहा विशेष उत्साह

द्वादश ज्योतिर्लिंगों के एक साथ दर्शन की व्यवस्था को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखा जा रहा है। मेले में पहुंचे कवर्धा जिले के मोहेन्द्र, दीपक, रामसिंग और नागेन्द्र ने कहा कि उनकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि वे देशभर में स्थित सभी ज्योतिर्लिंगों के दर्शन कर सकें, लेकिन राजिम कुंभ में मात्र आधे घंटे के अंतराल में ही सभी द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन हो गए। उन्होंने कहा कि यह व्यवस्था गरीब और सामान्य श्रद्धालुओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। वहीं महिला श्रद्धालुओं सीता साहू, राम्हीन बाई, चेतना, दीपमाला बिसाहिन और रामकली ने बताया कि कुंभ के अवसर पर वे पहली बार राजिम पहुंची हैं। उन्होंने कहा कि मेला क्षेत्र में घूमते-घूमते पैर थक जाते हैं, लेकिन व्यवस्था और आयोजन देखकर सारी थकान दूर हो जाती है। इतने विशाल और भव्य आयोजन के लिए उन्होंने छत्तीसगढ़ सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। श्रद्धालुओं ने कहा कि द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन भगवान आशुतोष को स्मरण करने का एक सशक्त माध्यम है। वैसे भी राजिम को हरि और हर की नगरी कहा जाता है, जहां आकर आध्यात्मिक अनुभूति स्वत: प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि राजिम कुंभ कल्प में द्वादश ज्योतिर्लिंगों के एक साथ दर्शन ने इस धार्मिक आयोजन को और भी विशेष बना दिया है।

जनकल्याणकारी योजनाओं से रुबरु करा रही प्रदर्शनी

शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने के उद्देश्य से राजिम कुंभ कल्प मेला में विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई है। नवीन मेला मैदान के स्थानीय मंच के समीप बने प्रदर्शनी स्टॉलों के माध्यम से लोगों को सरकार की योजनाओं, कार्यक्रमों और विकास कार्यों की विस्तृत जानकारी दी जा रही है। प्रदर्शनी में विभागों की योजनाओं को सरल और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। योजनाओं से जुड़ी पात्रता, लाभ, आवेदन प्रक्रिया और आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी भी आमजन को दी जा रही है, जिससे पात्र हितग्राही योजनाओं का सीधा लाभ उठा सकें। प्रदर्शनी में उपस्थित अधिकारियों-कर्मचारियों द्वारा शासन की मंशा और जनकल्याणकारी प्रयासों को प्रभावी रूप से आमजन के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रदर्शनी में आस्था का सम्मान, संस्कृति का निर्माण थीम के तहत भगवान श्रीराम के मंदिर के आकर्षक स्वरूप में सजाया गया है। इसके अलावा महिला कल्याण से जुड़ी योजनाओं की जानकारी प्रदर्शित की गई है। इसमें सरकारी नौकरियों में महिलाओं को अधिकतम आयु सीमा में 5 वर्ष की छूट, विभिन्न रिक्त पदों पर भर्ती, 34 नगरीय निकायों में नॉलेज बेस्ड सोसायटी के लिए लाइट हाउस निर्माण की पहल, 179 महतारी सदन निर्माण हेतु 52 करोड़ 20 लाख रुपये की स्वीकृति तथा महतारी वंदन योजना के अंतर्गत पात्र महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपये की सहायता राशि जैसी जानकारियां शामिल हैं।

लीला रॉक बैंड मुंबई की भक्तिमय प्रस्तुति

राजिम कुंभ कल्प मेला के शुभारंभ अवसर पर मुख्य मंच पर आयोजित सांस्कृतिक संध्या में मुंबई की प्रसिद्ध लीला रॉक बैंड ने अपनी शानदार और भक्तिमय प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। धार्मिक गीतों को आधुनिक संगीत के साथ प्रस्तुत करते हुए बैंड ने ऐसा समां बांधा कि पूरा मेला परिसर भक्ति और उल्लास से गूंज उठा।कार्यक्रम के दौरान जैसे ही मंच से भक्ति संगीत की सुरलहरियां बिखरीं, दर्शक स्वत: ही झूमने और तालियां बजाने पर मजबूर हो गए। शिव भक्ति, राम नाम और कृष्ण पर आधारित गीतों ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। युवा वर्ग के साथ-साथ बुजुर्ग और महिलाएं भी इस संगीतमय प्रस्तुति का आनंद लेते नजर आए। देवा गणेशा, कौन कहता है भगवान आते नहीं, आपकी कृपा से सब काम हो रहा है, राम आएंगे और राधा मेरी चंदा जैसे गीतों पर दर्शक भक्ति रस में डूबते नजर आए। उनकी प्रस्तुति ने राजिम कुंभ कल्प मेला के शुभारंभ को यादगार बना दिया। कार्यक्रम के समापन पर दर्शकों ने कलाकारों का जोरदार तालियों से स्वागत किया। मुख्य मंच पर चिरंजीवी हलधर द्वारा रिकॉर्डिंग गाने पर कत्थक नृत्य की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की अगली कड़ी में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार दिनेश जांगड़े ने मंच पर छत्तीसगढ़ के पारंपरिक पंथी नृत्य की अद्भुत प्रस्तुति दी। उनके हैरतअंगेज करतबों और अनुशासित नृत्य शैली को देखकर दर्शक आनंदित हो उठे। इसके बाद छुरा से आईं प्रसिद्ध पंडवानी गायिका खेमिन बाई निषाद ने महाभारत के 18 पर्वों का ओजपूर्ण शैली में बखान किया। उनकी सशक्त आवाज और भावनात्मक प्रस्तुति के दौरान पूरा पंडाल शांत होकर कथा श्रवण में लीन नजर आया। सभी कलाकारों का सम्मान जिला पंचायत के सीईओ प्रखर चंद्राकर, सहित प्रशासनिक अधिकारियों एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने स्मृति चिन्ह भेंटकर किया। इस दौरान मंच का संचालन निरंजन साहू एवं किशोर निर्मलकर द्वारा किया गया।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

पंथी, सुवा और पंडवानी की स्वरलहरियों में डूबा राजिम कुंभ कल्प मेला

राजिम कुंभ कल्प मेला के सांस्कृतिक मंच पर सोमवार को छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति की अनुपम छवि देखने को मिली। पंथी, सुवा, पंडवानी, जसगीत, रामायण, सतनाम भजन, देशभक्ति और लोकनृत्य की प्रस्तुतियों से मेला परिसर दिनभर गुंजायमान रहा। नदी मंच और नया मेला स्थल के स्थानीय मंच पर कलाकारों ने अपनी कला का शानदार प्रदर्शन किया। धरसींवा की यामिनी साहू ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी, वहीं राजिम के भोले साहू ने जसगीत के माध्यम से माता के भजनों को प्रस्तुत कर श्रोताओं की सराहना बटोरी। परसदाजोशी के श्यामरतन साहू ने रामायण के बालकाण्ड पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रामचरितमानस शिक्षा, संस्कार और जीवन मूल्यों को समझने का सशक्त माध्यम है। बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए रामायण पढ़ने और सुनने की परंपरा आवश्यक है। बकली के दुर्गेश कुमार भारती ने सतनाम भजन प्रस्तुत किया, जबकि मालगांव (गरियाबंद) के वामन नेताम ने सुंदरकाण्ड की प्रभावशाली व्याख्या की।

फाग गीतों और लोकनृत्य ने बांधा समां

नवीन मेला मैदान चौबेबांधा स्थित स्थानीय मंच पर धौराभाठा के लखनलाल यादव ने पंडवानी के माध्यम से महाभारत के प्रसंग सुनाए। सुंदरकेरा के ओमप्रकाश ने जगराता में माता के भजनों की प्रस्तुति दी। चौबेबांधा के आत्मानंद चेलक की पंथी प्रस्तुति और गणेशपुर की मुस्कान मिश्रा के लोकनृत्य ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। राजिम के भारत धीवर की फाग मंडली, गंजईपुरी के ललित ध्रुव का सुगम गायन और सड़कपरसुली की टीना बेला के सुवा नृत्य ने कार्यक्रम को और रंगीन बना दिया। बारबाहरा के लेखपाल साहू ने लोककला मंच पर छत्तीसगढ़ी गीतों की प्रभावशाली प्रस्तुति दी। नवापारा के बंटी प्रजापति ने भजन संध्या की शानदान प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन निरंजन साहू एवं किशोर निर्मलकर ने किया।

नदी तट पर आस्था के दीप

प्रदेश के कोने-कोने सहित अंचलों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने सूर्योदय पूर्व संगम में डुबकी लगाकर स्वयं को धन्य किया। धार्मिक मान्यता के अनुसार माघ पूर्णिमा पर प्रातः काल किया गया पुन्नी स्नान विशेष पुण्यदायी माना जाता है। स्नान उपरांत कई महिलाओं एवं युवतियों ने तीनों नदियों में स्नान के पश्चात नदी की रेत में शिवलिंग का निर्माण कर नारियल, बेलपत्र, धतूरा, दूध अर्पित कर विधिपूर्वक पूजा-अर्चना की। इसके साथ ही नदी की धार में दीपदान कर श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया। दीपदान का विशेष धार्मिक महत्व होने के कारण संगम क्षेत्र दीपों की पंक्तियों से आलोकित होता नजर आया।

धार्मिक स्थलों में दर्शन को उमड़ी भीड़

श्रद्धालुओं ने दीपदान कर श्री राजीव लोचन मंदिर एवं कुलेश्वरनाथ महादेव मंदिर पहुंचकर दर्शन-पूजन कर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। दोनों मंदिरों के अतिरिक्त लोमश ऋषि आश्रम, राजिम भक्तिन माता मंदिर, मामा-भांचा मंदिर, राजराजेश्वर, दानदानेश्वर एवं बाबा गरीबनाथ महादेव के दर्शन कर पुण्य लाभ लिया।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

प्रभात मिश्रा बने छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के अध्यक्ष

0 नए अध्यक्ष ने सम्भाला पदभार

छत्तीसगढ़ शासन ने राजभाषा के संवर्धन और शासकीय कामकाज में हिंदी के प्रभावी उपयोग को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए प्रभात मिश्रा को छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस संबंध में संस्कृति विभाग द्वारा आधिकारिक आदेश जारी कर दिया गया है।

जारी आदेश के अनुसार, राज्य शासन ने अपने निहित अधिकारों का प्रयोग करते हुए प्रभात मिश्रा को उनके कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से आगामी आदेश तक अस्थायी रूप से आयोग के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी है। शासन के इस निर्णय को प्रशासनिक कामकाज में राजभाषा के उपयोग को गति देने और भाषा आधारित नीतियों को प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

प्रभात मिश्रा रायपुर जिले के टिकरापारा स्थित नंदी चौक क्षेत्र के निवासी हैं और प्रशासनिक तथा सामाजिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भूमिका रही है। विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता तथा संगठनात्मक अनुभव को देखते हुए शासन ने उन्हें यह दायित्व सौंपा है।

उनकी नियुक्ति की खबर सामने आते ही साहित्यिक और बौद्धिक जगत में उत्साह का माहौल देखा गया। साहित्यकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और विभिन्न संगठनों ने उन्हें बधाई देते हुए आशा व्यक्त की है कि उनके नेतृत्व में राजभाषा आयोग नई ऊर्जा के साथ कार्य करेगा और हिंदी सहित छत्तीसगढ़ की भाषाई विरासत के संरक्षण व संवर्धन को नई दिशा मिलेगी। राजभाषा के क्षेत्र से जुड़े लोगों का मानना है कि यदि आयोग सक्रियता से कार्य करता है तो सरकारी दफ्तरों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है तथा आमजन और प्रशासन के बीच भाषा की दूरी कम होगी।

प्रभात मिश्रा रायपुर जिले के टिकरापारा स्थित नंदी चौक क्षेत्र के निवासी हैं और प्रशासनिक तथा सामाजिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भूमिका रही है। विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता तथा संगठनात्मक अनुभव को देखते हुए शासन ने उन्हें यह दायित्व सौंपा है।

नए अध्यक्ष ने सम्भाला पदभार

प्रभात मिश्रा ने सेक्टर 27, नवा रायपुर में स्थित छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग कार्यालय में कार्यभार ग्रहण किया। श्री मिश्रा स्वयंसेवक संघ से लंबे समय से जुड़े हुए हैं। साथ ही पूर्व प्रांत संघचालक स्व. केसी सुदर्शन की याद में होने वाले व्याख्यानमाला की आयोजन समिति के पदाधिकारी हैं, वे अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के भी राज्य अध्यक्ष हैं. वे पूर्व में हिंद स्वराज शोध पीठ कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रह चुके हैं साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने का उनको लंबा अनुभव है। श्री मिश्रा के कार्यभार ग्रहण में छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के सचिव डॉ. अभिलाषा बेहार ने पुष्पगुच्छ के साथ बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं साथ ही मिश्रा के साथ सतीश मिश्रा, अभय मिश्रा, रोहित साहू, मनीष शर्मा, नारायण चितलंगिया एवं कार्यालय के सभी कर्मचारी सुषमा गौराहा, आलोक हेण्डउ, सतीश कश्यप, आदर्श दुबे, सुनयना मार्को, दिनेश पाण्डेय, लोकेन्द्र वर्मा, लामेश्वर उरॉव, दीपक लकड़ा और शैलेन्द्र गहरवाल उपस्थित थे।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

छत्तीसगढ़ की सेवा भावना को राष्ट्रीय सम्मान

बस्तर की 'बड़ी दीदी' बुधरी ताती को पद्मश्री, पैदल यात्रा कर शिक्षा और स्वास्थ्य से जोड़ा

दंतेवाड़ा के सेवा समर्पित चिकित्सक दंपत्ति डॉ. रामचंद्र त्रयम्बक गोडबोले-सुनीता गोडबोले को भी पद्मश्री

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने तीनों विभूतियों को दी बधाई

केंद्र सरकार ने वर्ष 2026 के प्रतिष्ठित पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई है। छत्तीसगढ़ के लिए यह अत्यंत गौरवपूर्ण का क्षण है कि राज्य की तीन विशिष्ट हस्तियों का चयन पद्मश्री सम्मान हेतु किया गया है। समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दंतेवाड़ा की समाजसेविका बुधरी ताती तथा चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में दशकों से निस्वार्थ कार्य कर रहे डॉ. रामचंद्र त्रयम्बक गोडबोले एवं सुनीता गोडबोले को पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया जाएगा। डॉ. गोडबोले दंपत्ति को यह सम्मान संयुक्त रूप से प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री साय ने कहा है कि यह छत्तीसगढ़ के लिए गौरव की बात है। तीनों विभूतियों ने अपने सेवा भावना, मानवीय संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता से छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया है। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर घोषित पद्म पुरस्कारों की सूची में छत्तीसगढ़ की इन तीनों विभूतियों का नाम शामिल होना राज्य के लिए सम्मान और गौरव का विषय है। विशेष रूप से यह उल्लेखनीय है कि सम्मानित सभी हस्तियां बस्तर अंचल के दूरस्थ एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में वर्षों से सेवा कार्य कर रही हैं।

बस्तर की 'बड़ी दीदी' बुधरी ताती को पद्मश्री

दंतेवाड़ा जिले के हीरानार ग्राम की निवासी बुधरी ताती को महिला सशक्तिकरण, आदिवासी उत्थान एवं समाजसेवा के लिए पद्मश्री सम्मान प्रदान किया जाएगा। वर्ष 1984 से वे निरंतर वनांचल क्षेत्रों में नशामुक्ति, साक्षरता अभियान, सामाजिक जागरूकता तथा महिलाओं एवं बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। बुधरी ताती अभी तक 500 से ज्यादा महिलाओं को आत्मनिर्भर बना चुकी हैं। बुधरी ताती को छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन आदिवासी बच्चियों की शिक्षा, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा वृद्धजनों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। उनके समर्पण और स्नेहभाव के कारण स्थानीय लोग उन्हें सम्मानपूर्वक 'बड़ी दीदी' कहकर संबोधित करते हैं।

कौन हैं बुधरी ताती?

दंतेवाड़ा जिले के हीरानार गांव की बुधरी ताती को महिला उत्थान और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पद्मश्री पुरस्कार दिया जा रहा है। हीरानार गांव की रहने वाली आदिवासी महिला बुधरी ताती साल 1984 से लगातार वनांचल क्षेत्रों में नशामुक्ति, साक्षरता और आदिवासी समाज में जागरूकता के लिए कार्य कर रही हैं. बुधरी ताती का जन्म 15 सितंबर 1966 को हीरानार गांव में हुआ था। बचपन से ही उनमें पढ़ने की लगन और समाज सेवा की भावना थी. पिछले 36 वर्षों से वे नक्सल प्रभावित इलाकों में निरंतर समाज सेवा का कार्य कर रही हैं. उन्होंने पैदल यात्रा करते हुए बस्तर संभाग के लगभग 570 से अधिक गांवों तक पहुंच बनाकर आदिवासी समुदाय को शिक्षा और स्वास्थ्य से जोड़ा. विशेष रूप से महिलाओं को संगठित कर उन्हें प्रशिक्षण दिया और बस्तर में महिला सशक्तिकरण की एक नई मिसाल कायम की. बुधरी ताती ने सिकल सेल, खून की कमी, पीलिया, सिरदर्द, कमजोर बच्चों और पथरी जैसी बीमारियों को लेकर लोगों को

जागरूक किया. उन्होंने जड़ी-बूटियों के माध्यम से न सिर्फ स्वयं उपचार किया, बल्कि ग्रामीणों को भी इलाज के लिए प्रेरित किया।

क्या बोलीं बुधरी ताती?

पद्मश्री मिलने पर बुधरी ताती ने कहा कि उन्हें इसकी जानकारी पहले नहीं थी। अचानक फोन पर बधाइयां आने लगीं. उस समय वे फील्ड में थीं, कभी फोन लग रहा था तो कभी नेटवर्क नहीं मिल रहा था। बाद में उन्हें पता चला कि क्या बात है। उन्होंने कहा मैं शिक्षा के क्षेत्र में काम करती हूं. शिक्षा के माध्यम से 565 बहनों को साक्षर बनाया है. पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य और सामाजिक जागरूकता से जुड़े कार्य किए हैं। मैं वर्ष 1984 से इस सेवा कार्य से जुड़ी हूं। भारत सरकार की ओर से कॉल आया था, लेकिन मैं पहले ठीक से समझ नहीं पाई. बाद में बताया गया कि पद्मश्री पुरस्कार के लिए मेरा चयन किया गया है. अब तक मैंने अपने लिए कुछ नहीं किया, जो भी किया समाज के लिए किया। जिस समाज ने मुझे यहां तक पहुंचाया, उसके लिए मैं आभारी हूं।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

दुर्गम अंचलों में निःशुल्क चिकित्सा सेवा देने वाले गोडबोले दंपत्ति सम्मानित

चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए डा।. रामचंद्र त्रयम्बक गोडबोले एवं उनकी धर्मपत्नी सुनीता गोडबोले को संयुक्त रूप से पद्मश्री सम्मान से नवाजा जाएगा। आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. गोडबोले और उनकी पत्नी पिछले 37 वर्षों से अधिक समय से बस्तर एवं अबूझमाड़ जैसे अत्यंत दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों में निःशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान कर रहे हैं। स्वास्थ्य जागरूकता, कुपोषण उन्मूलन और प्राथमिक उपचार को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से दोनों ने 'ट्रस्ट फॉर हेल्थ' के माध्यम से ऐसे गांवों तक इलाज पहुंचाया है, जहां सड़क, बिजली और मोबाइल नेटवर्क जैसी मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। वे स्वयं पैदल अथवा सीमित साधनों के सहारे इन क्षेत्रों में पहुंचकर नियमित स्वास्थ्य शिविर आयोजित करते हैं और मरीजों का उपचार करते हैं। पद्मश्री सम्मान के लिए छत्तीसगढ़ की इन विभूतियों का चयन राज्य की सेवा भावना, मानवीय संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता को राष्ट्रीय पहचान दिलाता है। यह सम्मान न केवल संबंधित व्यक्तियों के लिए, बल्कि समूचे छत्तीसगढ़ विशेषकर बस्तर अंचल के लिए गर्व का विषय है और समाजसेवा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए प्रेरणास्रोत भी है।

बस्तर के अब तक इन लोगों को मिला पद्मश्री पुरस्कार

बस्तर के धर्मपाल सैनी, अजय मंडावी, हेमचंद मांझी और पंडी राम मंडावी को पहले पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा जा चुका है. अब बुधरी ताती और गढ़बोले दंपति को पद्मश्री से सम्मानित किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ी फाग का लोकरंग

डॉ. पीसी लाल यादव, वरिष्ठ साहित्यकार

" भारतीय जीवन और संस्कृति में जो सर्वाधिक आभामय और विविध रंगी हैं, वह 'लोक' ही है। लोक केवल गाँव में ही नहीं बसता, बल्कि शहरों में भी बसता है। यह वह लोक है जिसे शहरी जीवन और सुविधाओं ने उसे उसकी जड़ से काटने की कोशिश की, पर अलग नहीं कर पाया। लोक का प्रभाव ही है जो उसे अपनी माटी, अपनी प्रकृति और संस्कृति से जोडे रखता है। जीवन-यापन के लिए लोग अपना गाँव, अपनी माटी छोड तो देते हैं, किन्तु वे अपनी संस्कृति से प्राणपन से जुड़े रहते हैं। यह संस्कृति उसे जीने के लिए उर्जा देती है। अपने गीतों के माध्यम से माटी और प्रकृति के प्यार और दुलार को तीज त्योहारों में गुनगुनाने के लिए प्रेरित करती है। लोक के तीज-त्यौहार रंग रंगीले होते हैं। यदि बात होली की हो तो यह और भी ज्यादा रंग - रंगीली तथा मस्ती भरी है। "

बसंत आगमन - होली का स्मरण आते ही छत्तीसगढ़ की होली और यहाँ गाये जाने वाले फाग गीतों की मादकता मन - प्राण को मुदित कर देती है। जड़काला ज्यों ही बीतने लगता है, हवा थोड़ी रंग बदलती है। बासंती आहट देती है। धूप गुनगुनी हो जाती है। कोयल कुकने लगती है। आम्रमंजरी से बिखरते गंध सांसो में समा ने लगती है। फूलों का रंग निखरने लगता है। खेतों में गेहूं, सरसों और चने के पौधे थिरकने लगते हैं। माघ महीने की बसंत पंचमी से फाग गीतों की स्वर लहरी गांवों में गूँजने लगती है। तब गाँव का दृश्य हमारी आँखों को संतृप्त करती है, कुछ इस तरह -

पिंवरी पहिर सरसों झूमे,
तितली-भौंरा गाल चूमें।
अरसी ह बांधे अंईठी मुरेरी पागा,
बटरा तिंवरा ढिले मया के तागा।
पुरवइहा ह बइहा बन घूमे,
पिंवरी पहिर सरसों झूमें।
ढोलक बजावथे ढेमना चना ह,
राहेर हलावथे धरे घुनघुना ल।
गहूं घलो हरमुनिया धुंके,
पिंवरी पहिर सरसों झूमें।
धरसा के परसा सुलगावत हे आगी,
लाली सेम्हरा ला फभे, हरियर पागी।
कोयली हा बांसुरिया फूंके,
पिंवरी पहिर सरसों झूमे।
जंगल-पहर माते-माते हे मऊहा,
नरवा तीर नशा म, झुमरत हे कऊहा।
मउरे आमा देवय हूमें,
पिंवरी पहिर सरसों झूमें।।

अंडी की डालियाँ – छत्तीसगढ़ का प्रत्येक तीज-त्यौहार चाहे वह अक्ती हो हरेली हो, भोजली हो, तीजा हो या पोरा, सुरहुत्ती, छेरछेरा हो या होली। सभी प्रकृति और कृषि संस्कृति से सम्बंधित हैं। होली की बात ही निराली है। गांवों में इसकी शुरुआत बसंत पंचमी से हो जाती है। बसंत पंचमी के दिन होले डांड (होलिका जलाने का स्थान) में विधि - विधान से पूजन कर अंडी (येरंड) की डाली या पेड़ गडा कर की जाती है। फिर बच्चे इसी दिन लकड़ी इकट्ठा करना शुरू कर देते हैं। इन बच्चों को होलहार कहा जाता है। इनमें युवा भी शामिल रहते हैं। इनमें उन्माद अधिक होता है। इसी दिन से फाग का गायन प्रारंभ होता है। नंगारा, तासक और झांझ के साथ शुरू होती है फाग गीतों की स्वर लहरी। क्या बच्चे, क्या युवा और क्या बूढ़े? सब मस्ती में झूमने लगते हैं -

फागुन महिना पहुना बन आज आये
पहुना बन आज आये हो फागुन महिना
पहुना बन आज आये
कहाँ धूम मचत हे ? कहाँ परे गोहार ?
काहेन के मऊर बांधे ? कोन ठाढ़े दुवार।
पहुना बन आज आए।
शहर-नगर धूम मचत हे, गाँव परे गोहार,
आमा के मऊर बांधे, फागुन ठाढ़े दुवार
पहुना बन आज आये।

होलिका की कथा – बसंत पंचमी से प्रारंभ फाग प्रतिदिन रससिक्त होते जाता है। लोक जीवन के विविध रंग लोक कथाओं से मुखरित होते हैं। वाचिक परम्परा की लोकधारा लोक कथाओं से निकल कर लोकमानस को अभिसिंचित कर उर्जस्वित करती है। फाग गीत बड़े सहज, सरस और सरल होते हैं। लोक गीतों की अजस्र धारा बसंत से लेकर होलिका दहन पश्चात चौत्र माह के तेरस तक लोक को आनंदित करती है।

होलिका दहन की पौराणिक कथा से सभी परिचित हैं। अत्याचारी हिरण्यकश्यप ने अपने रामभक्त पुत्र प्रहलाद को नष्ट करना चाहा। तब होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई, क्योंकि होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह आग में नहीं जलेगी। किन्तु हुआ उल्टा होलिका जल गई और प्रहलाद बच गया। यही होता है , जब हम अपनी प्राप्त शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं और अपनी ताकत से 'जन' को दबाना चाहते हैं। तब जन की ताकत बड़ी होती है। वह अपनी शक्ति और संगठन से अहंकारी सत्ताधीशों को उखाड़ फेकती है। होली के इस त्यौहार का गुढार्थ तो मुझे यही मालूम होता है। सत्य की प्रतिस्थापना और असत्य का विनाश।

होली रंगों का त्यौहार है। फाग गीतों का त्यौहार है। वो फाग गीत जिनमें लोक जीवन नाचता है, गाता है, और अपने विविध मनोभावों को प्रकट करता है। फाग गीतो में राम व कृष्ण से संबंधित विषयों की अधिकता होती है।

दे दे बुलौवा राधे को नगर में
दे दे बुलौवा राधे का
कुंजन बीच होरी होय, कुंजन में होरी होय
दे दे बुलौवा राधे को।

कुंवारी अग्नि –होलिका दहन के दिन मुहूर्त देखकर होली जलाई जाती है। छत्तीसगढ़ में होली जलाने की परम्परा बड़ी निराली है। गाँव में, नगर में कई स्थान पर होली जलाई जाती है। इनमें एक स्थान प्रमुख होता है जहाँ पर चकमक पत्थर व सेम्हरा फल के रेशे से अग्नि उत्पन्न की जाती है। जिसे "कुँवारी अग्नि" कहा जाता है। फिर उसके बाद कुँवारी अग्नि से जले होलिका डांड से आग ले अन्य स्थानों की होली जलती है। चकमक पत्थर, कनाछी लोहा और सेम्हरा फूल के रेशे से पैदा यह अग्नि मानव के आदिम अवस्था और इतिहास की ओर इंगित करती है। जब आदिमानव ने पत्थरों को लुढ़कते देखकर उससे पैदा अग्नि की चमक को समझकर तब आग जलाना सीखा। फाग गीतों में लोक परम्परानुसार पहले गणपति की वंदना की जाती है।

गणपति को मनाँव, गणपति को मनाँव
प्रथम सुमर गणपति को।
काखर भए गणपति, काखर हनुमान?
काखर भैरव बाबा, काखर सिरीराम?
प्रथम सुमर गनपति को।
गौरी के गणपति भए, अंजनी के हनुमान,
कालिका के भैरव बाबा, कौशिल्या के राम
प्रथम सुमर गणपति को।

पंच लकड़ियां – होली त्यौहार जिसे छत्तीसगढ़ में फागुन तिहार भी कहा जाता है। इसकी अनेक लोक रंगी आभा है, जो हमारे लोकाचार को भी प्रकट करती है। होले डांड में जहाँ होली जलाई जाती है, वहाँ सुबह गाँव के घरों से प्रत्येक लोग जाकर पाँच-पांच कंडे डालते हैं। साथ ही चाँवल के दाने छिड़क कर होले डांड की परिक्रमा करते हैं। ये पांच कंडे पांच लकड़िया के प्रतीक हैं। मृत्य व्यक्ति की चिता में दी जाने वाली लकड़ी की परम्परा का निर्वहन। होलिका दहन स्थल की राख को एक दूसरे के माथे पर टीका के रूप मे लगाते हैं और यथा योग्य अभिवादन करते हैं। होली की यह राख पवित्रता का प्रतीक है, जिसमें असत्य को जलाकर राख कर दिया गया है। यह सत्य और पवित्रता की राख है। इस राख की छोटी गठरी बनाकर लोग अपनी कोठी में भी रखते हैं। ऐसी लोक मान्यता है कि इससे धन - धान्य की वृद्धि होती है। फाग गीतों में राधा कृष्ण और राम सीता आदर्श जोड़ी के रूप में उपस्थित होते हैं।

अरे बाजे नंगारा दस जोड़ी
राधा किशन खेलय होरी।
पहिली नंगारा अवध में बाजे
राम- सीता के है जोड़ी
राधा -किशन खेलय होरी।।

सामाजिक चेतना – फाग गीतों मे जहाँ मनोरंजन है, मस्ती और उमंग है, वहीं सामाजिक चेतना की लौ भी दिखाई देती है। जब लोग सुबह होली में पाँच कंडे डालने के लिए जाते हैं, तब घरों मे होने वाले ढेकना (खटमल) किरनी (पशुओं का खून चूसने वाला जीवाणु) तथा खसु (खुजली) के छिलके को अलग-अलग गोबर की गोली में डालकर लाते हैं और होली मे डाल देते हैं। इसके पीछे ऐसी मान्यता है की इससे ढेकना, किरनी और खुजली समाप्त हो जाती है। ढेकना और किरनी को होली में जलाना सामाजिक चेतना का प्रतीक है। जो शोषक और अत्याचारी अन्यायी हैं, वे गरीबों के परिश्रम की कमाई और खून को ढेकना और किरनी की तरह चूसते हैं। अत: प्रतीकात्मक रूप में उन्हें जलाना आम व्यक्ति जो शोषित और पीड़ित हैं, उसके मन का भाव है। फाग इससे अछूता नही है-

अरे हाँ रे ढेकना... कहाँ लुकाए खटिया म
अरे कहाँ लुकाए खटिया म रे ढेकना
कहाँ लुकाए खटिया में
होलिका संग करंव रे बिनास ढेकना
कइसे लुकाए खटिया में

ढेकना और होलिका में स्वभाव की साम्यता है। दोनों शोषण और अन्याय के पक्षधर हैं। इस लिए दोनों का विनाश जरुरी है। दोनों का विनाश लोक समाज होली में करता है।

नेऊज परंपरा –फाग गीतो मे लोक के खान-पान का वर्णन मिलता है। एक यह बात भी उल्लेखनीय है कि जिस दिन होली का त्यौहार मनाया जाता है, रंग-गुलाल खेला जाता है, उसी दिन गाँव में नेऊज चढाने की परम्परा है। जिसे नवा खाई भी कहा जाता है। नेऊज नवान्न है। इस दिन गेहूं की नई बाली के कुछ दाने आटा में मिलाकर व्यंजन बनाये जाते हैं। जिन्हें कुल देवता को अर्पित किया जाता है। इसके बाद की नए गेहूं के आंटे का उपयोग रोटी के लिए किया जाता है। छत्तीसगढ़ में नए धान के चाँवल का नेऊज नवरात्रि या दशहरा के दिन चढ़ाया जाता है। हमारे गीत हमारे खान-पान से अलग नहीं है। फाग गीत में खान-पान का लोकरंग देखें-

खान-पान -
अरे हाँ गुलाबी चना, मजा उड़ा ले भजिया में।

इसी तरह का एक और एक दूड़िया फाग गीत-

अरे हाँ रे कांदा भाजी, मजा उड़ा ले बोईर में।

फाग गीत की लोक रंगी आभा का एक और मजेदार पक्ष जो चिंगरी मछरी को लेकर है-

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

अरे हाँ रे चिंगरी मछरी
चिंग-चिंग कूदे तरिया में
अदवरी बरी में मजा बताय रे चिंगरी
चिंग-चिंग कूदे तरिया में।

राष्ट्र प्रेम व इतिहास –फाग गीतों में केवल मनोरंजन या मौज मस्ती ही नहीं हैं। इसमें राष्ट्रप्रेम और आजादी की बातें भी शामिल है। हम सभी जानते है कि आजादी की लड़ाई हमारे पुरखो ने गाँधी जी के नेतृत्व मे लड़ी। अपने प्राणों का उत्सर्ग किया तब यह आजादी हमें मिली। लोक आज भी फाग गीतो में गाता है –

अरे हाँ गाँधी तिरंगा फहरा दिए भारत में
भारत में, भारत में, भारत में
गाँधी तिरंगा फहरा दिए भारत में
फहरइया जवाहर लाल –फहरइया जवाहर लाल
गाँधी तिरंगा फहरा दिए भारत में
आजादी की लड़ाई लड़ते हमारे छत्तीसगढ़ के लोगों ने खादी और गाँधी का गुणगान फाग गीतों मे किया –
अरे कपड़ा पहिरो खादी के भईया
जय बोलो महात्मा गाँधी के।

पर्यावरण प्रेम –जैसे-जैसे हम लोक सरिता मे अवगाहन करते हैं, वैसे-वैसे ही लोकगीतों के मोती हमें मिलते जाते हैं। लोक राजा विक्रमादित्य को भी प्रति की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। लोक राजा से पूछता है कि तुम्हारे बाग-बगीचे में कौन -कौन से पौधे लगे हैं?

राजा विक्रमादित महाराजा
केंवरा लगे हे तोर बागों में।
के ओरी लगे राजा केंवती अउ केंवरा
के ओरी लगे अनार महाराजा
केंवरा लगे हे तोर बागो में
नव ओरी लगे राजा केकती अउ केंवरा
दस ओरी लगे अनार महाराजा
केंवरा लगे हे तोर बागो में।

संयोग श्रृंगार – फाग में संयोग और वियोग का भी रंग बिखरा है। लोक गीतों मे समूह की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए यह ज्यादा प्रभावी और संप्रेषणीय होता है। शब्द भी सहज, सरल और लोक व्यवहार के रस में पदो सास होते है। किसी भी लोक विधा के गीत को फाग में ढाल देना लोक गायक की विशेषता होती है। लोक गायक केवल गायक ही नहीं होता, बल्कि वह आशुकवि की तरह गीत भी गढ़ लेता है। लोक का यह रंग लोक संपदा की समृद्धि का सूचक है।

फाग की एक बानगी –
जरगे मंझनिया के घाम ग
आमा तरी डोला ल डोला ल उतार दे, उतार दे
आमा तरी डोला ल उतार दे
आमा तरी डोला उतार दे
पहिली गवन बर ससुर जी मोर आइन
नइ जावँव ससुर जी के संग हो
आमा तरी डोला ल उतार दे।

वियोग श्रृंगार –इसी तरह से देवर भी गवन लेने के लिए आता है। नायिका देवर के साथ भी जाने से इंकार करती है, किन्तु जब सैंया जी गवन ले जाने के लिए आते हैं, तो वह सहज तैयार हो जाती है। संयोग की तरह ही वियोग का भी एक उदाहरण –

आये-आये फगुनवा के रात मोर लालनी,
सईया अभागा नई आए
काखर बर भेजँव लिख-लिख पतिया
काखर बार भेजँव संदेश मोर ललनी
सईया अभागा नई आए।।

इतिहास लोकगाथा –फाग गीतो में लोक जीवन के वे सारे रंग मिलते हैं, जो लोक की अनुभूतियो से उपजे हैं। चाहे लोक का सांस्कृतिक पक्ष हो या सामाजिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष हो या ऐतिहासिक पक्ष। लोक तब भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा। लोक ही तो आधार है शास्त्र का, वेद का। फाग गीत में इतिहास का भी रंग समाहित है। आल्हा उदल लोक के प्रमुख पात्र हैं। आल्हा खंड और आल्हा गायन में ये लोक का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपनी वीरता और चतुराई के कारण इन्हें पाँडवों का अवतार माना जाता है। उदल की वीरता का बखान इस फाग गीत में द्रटव्य है –

उदल बांधे तलवार, उदल बंधे तलवार
एक रानी सोनवा के कारण।
काखर डेरा बाहिर में
काखर कदली कछार
एक रानी सोनवा के कारन।
आल्हा के डेरा बाहिर में,
उदल कदली कछार
एक रानी सोनवा के कारन।

अध्यात्म दर्शन – फाग अध्यात्म और दर्शन में भी रंगा हुआ है । छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में कबीरदास तुलसी दास, सूरदास और घासी दास की प्रेम भक्ति का प्रभाव साफ साफ दिखाई पड़ता है। फाग इससे कतई अलग नहीं है।

बही जात एक नंदिया धारा
बही जात एक नंदिया बहत हे
लख चौरासी धारा।
धरमी-धरमी पार उतरगे
पापी बहे मझधारा।
बही जात एक नंदिया।।
पुरइन पत्ता रहे जल भीतर,
जल ही में करे पसारा।
वाके डार पान नहीं दिखे,
छलक जात जल सारा।।
बही जात एक नंदिया..!!

डॉ. पीसी लाल यादव
'साहित्य कुटीर'
गंडई पंड़रिया जिला राजनांदगांव
मो. नं. 9424113122

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

छत्तीसगढ़ में गांव-गांव बिछा सड़कों का जाल

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से राज्य में 25 वर्षों में बनी 40 हजार किमी सड़कें

राज्योत्सव में प्रधानमंत्री मोदी ने की राज्य में ग्रामीण सड़क निर्माण की सराहना

छत्तीसगढ़ में पिछले 25 सालों में गांव-गांव में बिछे सड़कों के नेटवर्क ने राज्य के ग्रामीण इलाकों की काया पलट दी है। अब राज्य के गांवों में नई सड़कों से आ रहे बदलाव को महसूस किया जा सकता है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने देश के ग्रामीण इलाकों में बारहमासी सड़कों से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना 2000 में शुरूआत की। यह योजना देश के साथ ही राज्य के ग्रामीण इलाकों में परिवर्तनकारी सिद्ध हुई।

छत्तीसगढ़ में इस योजना के जरिए लगभग 40 हजार किलोमीटर सड़कें बनायी जा चुकी है। राज्य निर्माण के पहले यहां सड़कों का औसत देश के पूर्वोत्तर राज्यों से भी नीचे था। उस समय यहां ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 4200 किलोमीटर सड़कें थी। इस स्थिति में यहां के लोगों के जीवन स्तर का अनुमान सहज रूप से लागाया जा सकता था। देश में जब यह योजना शुरू हुई तब ग्रामीण समृद्धि का नया दौर शुरू हुआ। सड़कें केवल आवागमन का जरिया नहीं बल्कि यह सामाजिक आर्थिक परिवर्तन का माध्यम भी है। वर्तमान में ग्रामीण सड़कों के मजबूत नेटवर्क ने सुशासन और आंत्योदय के सपने को पूरा करने का मजबूत आधार दिया है। आज छत्तीसगढ़ के किसान अपने खलिहानों से धान की फसल खरीदी केन्द्रों तक आसानी से पहुचा पार रहे है। ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से आसानी से राशन पहुंच रहा है। आंगनवाडियों के पोषण आहार में गड़बडी जैसे मामले अब देखने को नहीं मिल रहे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ाने में भी सड़के मददगार सिद्ध हो रही है।

32 हजार किलोमीटर पक्की सड़कें और पुल -पुलिया बनाई

सड़कों के लोगों में गतिशीलता बढ़ी है। लोग रोजगार और स्वरोजगार के नए नए माध्यमों को अपना रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में लोग पुराने दिनों को याद करते हुए बताते हैं कि गांव की सड़के बहुत दुरूह होती थी। कई बार नदी नालों को पार कर एक गांव से दूसरे गांव तक जाना पड़ता था। इस योजना ने उन्हें नई ताकत दी है। अब सड़के डामरीकृत होने के साथ ही पुल पुलिए बनने से आवागमन सहज हुआ है। छत्तीसगढ़ के शुरूआती 16 वर्षों में तेजी से ग्रामीण सड़कों का निर्माण हुआ। लगभग 32 हजार किलोमीटर पक्की सड़कें और पुल -पुलिया बनायी गई। इन सड़कों के माध्यम से साढे 10 हजार से अधिक बसाहटों को जोड़ा गया। अब तक योजना में 40,415 किमी लंबी 8,310 सड़कों एवं 426 वृहद पुलों का निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। इस योजना मे दूसरे और तीसरे चरण में 10 वर्ष पुरानी सड़कों का मजबूतीकरण और उन्नयन का कार्य किया गया। इस चरण में कुल 5,583 किमी लंबाई की 534 सड़कों एवं 82 वृहद पुलों का निर्माण कार्य पूर्ण जा चुका है। स्वीकृत सभी परियोजनाएं शत-प्रतिशत पूर्ण की जा चुकी हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने की सराहना

राज्य के वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों में नक्सली उन्मूलन की दिशा में इस योजना ने सार्थकता सिद्ध की है। इन क्षेत्रों में 12,459 किमी लंबाई की बनाई गई हैं। इससे 3,853 बसाहटें भी मुख्यधारा से जुड़ी। जिससे इन क्षेत्रों में आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा व्यवस्था को नया आयाम मिला है। राज्योत्सव के उद्घाटन समारोह में शामिल हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सराहना करते हुए कहा कि मैं राज्य निर्माण के पहले भी छत्तीसगढ़ आया करता था। उस समय गांवों तक पहुंच पाना बहुत मुश्किल होता था। कई गांवों में सड़क थे ही नहीं, 25 वर्षों में राज्य ने बहुत तरक्की की है। आज राज्य में 40 हजार किलोमीटर से अधिक लंबे सड़कों का जाल गांव गांव तक फैल गया है।

छत्तीसगढ़ के सतत प्रयासों का सशक्त उदाहरण

उपमुख्यमंत्री एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री विजय शर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ में सड़कों से जुड़ते गांव और सशक्त होते ग्रामीण मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की दिशा में छत्तीसगढ़ के सतत प्रयासों का सशक्त उदाहरण है। उन्होंने बताया कि चौथे चरण में जनजातीय क्षेत्रों और विशेष पिछड़ी जनजाति बहुल गांवों में 8 हजार से अधिक किलोमीटर सड़के बनाए जाने की योजना है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष योजना, प्रधानमंत्री जनमन योजना और आकांक्षी जिलों की बसाहटों में सड़कें प्राथमिकता से बनायी जाएंगी।

■ प्रेम चक्रधारी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: विकास का नया युग, लेकिन संतुलन की बड़ी चुनौती

प्रेम चक्रधारी

डिजिटल क्रांति के वर्तमान दौर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने वाला परिवर्तनकारी माध्यम बन चुका है। जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन प्रणाली को बदला था, उसी प्रकार । AI कार्य संस्कृति, निर्णय प्रक्रिया और मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। आज शिक्षा, स्वास्थ्य, पत्रकारिता, उद्योग, कृषि और शासन व्यवस्था में AI का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इससे कार्यक्षमता, सटीकता और पारदर्शिता में वृद्धि हुई है, लेकिन इसके साथ रोजगार, निजता, नैतिकता और सामाजिक संतुलन से जुड़ी गंभीर चुनौतियां भी सामने आ रही हैं।

शिक्षा क्षेत्र में AI की भूमिका

शिक्षा क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और व्यक्तिगत बनाया है। AI आधारित प्लेटफॉर्म छात्रों की सीखने की गति और क्षमता का विश्लेषण कर उनकी आवश्यकता के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। वर्चुअल क्लासरूम, ऑनलाइन परीक्षाएं और स्मार्ट मूल्यांकन प्रणाली के माध्यम से शिक्षा अधिक सुलभ और पारदर्शी बनी है। विशेष रूप से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा की पहुंच बढ़ने से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विस्तार संभव हुआ है।

स्वास्थ्य सेवाओं में तकनीकी सहयोग

स्वास्थ्य क्षेत्र में AI तकनीक रोगों की पहचान और उपचार को अधिक सटीक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी और मेडिकल इमेजिंग में AI आधारित विश्लेषण से बीमारियों की प्रारंभिक पहचान संभव हो रही है, जिससे समय पर उपचार शुरू किया जा सकता है। टेलीमेडिसिन के माध्यम से दूर-दराज के मरीजों को विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श मिलना आसान हुआ है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच व्यापक हुई है।

पत्रकारिता और मीडिया में उपयोग

पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में AI सूचना संग्रह, डेटा विश्लेषण और ट्रेंड पहचान में सहायक सिद्ध हो रहा है। समाचारों के प्रारंभिक ड्राफ्ट तैयार करने, फैक्ट-चेकिंग और पाठकों की रुचि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत करने में AI का उपयोग बढ़ा है। इससे समाचारों की गति और प्रस्तुति में सुधार हुआ है, हालांकि इसी तकनीक के माध्यम से फर्जी खबरें और डीपफेक जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं, जिनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है।

व्यापार और उद्योग में प्रभाव

व्यापार और उद्योग में AI आधारित ऑटोमेशन ने उत्पादन प्रक्रिया को अधिक कुशल और लागत प्रभावी बनाया है। कंपनियां उपभोक्ताओं के व्यवहार का विश्लेषण कर बेहतर विपणन रणनीति तैयार कर रही हैं। कस्टमर सपोर्ट, सप्लाई चेन मैनेजमेंट और गुणवत्ता नियंत्रण जैसे क्षेत्रों में AI का उपयोग तेजी से बढ़ा है, जिससे उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता मजबूत हुई है।

कृषि और ग्रामीण विकास

कृषि क्षेत्र में AI किसानों के लिए उपयोगी उपकरण के रूप में उभर रहा है। मौसम पूर्वानुमान, मिट्टी की गुणवत्ता का विश्लेषण, फसल रोग पहचान और उत्पादन अनुमान जैसी तकनीकों से किसानों को बेहतर निर्णय लेने में सहायता मिल रही है। इससे संसाधनों का कुशल उपयोग संभव हो रहा है और उत्पादन बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं।

प्रशासन और शासन व्यवस्था

प्रशासनिक कार्यों में AI के उपयोग से पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी है। सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन, डेटा प्रबंधन और जन शिकायत निवारण में ।ए आधारित प्रणाली मददगार साबित हो रही है। इससे सेवाओं की त्वरित उपलब्धता और जवाबदेही को मजबूत करने में सहायता मिल रही है।

रोजगार और कौशल विकास

AI ने जहां कुछ पारंपरिक नौकरियों को प्रभावित किया है, वहीं नए रोजगार अवसर भी उत्पन्न किए हैं। डेटा साइंस, मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा और डिजिटल तकनीक से जुड़े क्षेत्रों में कुशल युवाओं की मांग बढ़ रही है। भविष्य में रोजगार का स्वरूप अधिक कौशल आधारित होने की संभावना है, जिसके लिए शिक्षा और प्रशिक्षण व्यवस्था में बदलाव आवश्यक होगा।

विकास के साथ बढ़ती चुनौतियां

रोजगार पर प्रभाव

AI और ऑटोमेशन के बढ़ते उपयोग से कई पारंपरिक नौकरियों के समाप्त होने की आशंका बढ़ी है। विशेष रूप से डेटा एंट्री, क्लेरिकल कार्य और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में मानव श्रम की आवश्यकता कम हो रही है। यदि समय रहते कौशल विकास और पुन: प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं की गई, तो बेरोजगारी एक गंभीर सामाजिक समस्या बन सकती है।

मानवीय हस्तक्षेप में कमी

AI आधारित निर्णय प्रणाली सटीक हो सकती है, लेकिन उसमें मानवीय संवेदना और सामाजिक संदर्भ की समझ का अभाव हो सकता है। स्वास्थ्य, न्याय और प्रशासन जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में पूरी तरह मशीनों पर निर्भरता कई बार अनुचित या पक्षपाती निर्णयों का कारण बन सकती है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

सूजी से बनेगा टेस्टी नाश्ता, बार-बार खाने से नहीं भरेगा पेट

अगर रोज-रोज वही पराठा या ब्रेड खाकर बोर हो गए हैं और कुछ चटपटा और लाजवाब खाने का मन है, तो आज की यह रेसिपी आपके लिए ही है। सूजी से बनने वाला यह नाश्त इतना स्वादिष्ट है कि एक बार खाने से पेट नहीं भरेगा और खुशबू ऐसी फैलेगी कि पड़ोसी भी पूछ बैठेंगे आखिर बनाया क्या है? तो चलिए बिना देर किए नोट करते हैं इसकी आसान रेसिपी।

सूजी का नाश्ता बनाने के लिए सामग्री :

सूजी के आटे के लिए सामग्री:

सूजी आधा कप, आटे के लिए पानी, आधा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच चिली फ्लैक्स, और हरी धनिया की पत्तियां

सब्जियों के लिए सामग्री:

आधा कप हरी मटर, आधा कप कटी हुई शिमला मिर्च, आधा कप कटी हुई गाजर, और 2 टमाटर

मसालों के लिए सामग्री:

1 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर, आधा छोटा चम्मच हल्दी, और 1 छोटा चम्मच नमक, 1 बड़ा चम्मच नूडल मसाला, ग्रेवी के लिए पानी डेढ़ कप

कैसे बनाएं सूजी का नाश्ता?

सूजी का यह नाश्ता बनाने के लिए सबसे पहले गैस ऑन करें और उसपर एक गहरा पैन रखें पैन में आधा गिलास पानी डालें। पानी में आधा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच चिली फ्लैक्स, और हरी धनिया की पत्तियां डालें।

जब पानी हल्का उबलने लगे तब उसमें सूजी डालें और उसे अच्छी तरह से मिलाएं। अब गैस बंद कर दें और सूजी का मिश्रण जब ठंडा हो जाए तब उसको अच्छी तरह से गूंथें। अब सूजी के छोटे छोटे बॉल्स बनाएं और उसे हल्का गहरा करें।

अब एक पैन में तेल डालें और उसमें राई, जीरा और करी पत्ते से तड़का दें। जब ये चटकने लगे तो उसमें बारीक कटा प्याज डालें। जब प्याज सुनहरा होने लगे तब उसमें मटर, बारीक कटे शिमला मिर्च, गाजर और 2 टमाटर को डालें और इन्हें अच्छी तरह से पकाएं।

जब ये सब्जियां पक जाएं तब, उसमें लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और 1 बड़ा चम्मच नूडल मसाला डालें। ग्रेवी के लिए उसमें डेढ़ कप पानी हल्दी और नमक डालें। जब मसाले अच्छी तरह पक जाएं तब उसमें सूजी के बॉल्स को डालें। और दो मिंट तक पकाएं। आपका सूजी का ये चटपटा रेसिपी बनकर तैयार है।

जयति लोकदर्शन
लोक संवेदना का स्वर...

'धुरंधर 2' में बरसेगा हमजा का कहर

0 रणवीर सिंह का दिखा रौद्र रूप

'धुरंधर' की ताबड़तोड़ सफलता के बीच जो दर्शक रणवीर सिंह की ब्लॉकबस्टर फिल्म के अगले भाग की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं वो जल्दी ही खत्म होने वाला है। इस बीच मेकर्स ने फिल्म का टीजर भी जारी कर दिया है। फिल्म के डायरेक्टर आदित्य धर और कलाकारों रणवीर सिंह, आर माधवन, सारा अर्जुन सहित अन्य ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर करते हुए टीजर रिलीज की ओर इशारा किया था और अब दर्शकों के बीच धुरंधर 2 का टीजर जारी हो चुका है।

धुरंधर 2 का टीजर

धुरंधर 2 का टीजर जारी होते ही दर्शक इस पर टूट पड़े हैं। मेकर्स ने हिंदी के साथ ही तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ में भी टीजर जारी किया है। अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचने के लिए, फिल्म निर्माताओं ने पुष्टि की है कि फिल्म तमिल, तेलुगु और अन्य कई भाषाओं में रिलीज होगी। जानिए धुरंधर 2 को आप कितनी भाषाओं में देख सकते हैं। टीजर की बात करें तो इसकी शुरुआत ही बेहद भयावह है और रणवीर सिंह का रौद्र रूप देखने को मिल रहा है।

'ये नया हिंदुस्तान है'

धुरंधर 2 के टीजर में रणवीर सिंह बेहद दमदार और खतरनाक लुक में नजर आ रहे हैं। कुल 1 मिनट 12 सेकेंड का ये वीडियो मार धाड़ और गोलियों की गड़गड़ाहट से भरा है। न तो कईं कोई शब्द और न डायलॉग। लेकिन, आखिरी में रणवीर एक खास मैसेज जरूर देते दिखे। टीजर के आखिरी में रणवीर सिंह का किरदार कहता है- 'ये नया हिंदुस्तान है, ये घर में घुसेगा भी और मारेगा भी'।

टीजर पर यूजर्स के रिएक्शन

धुरंधर 2 के टीजर पर यूजर भी जबरदस्त प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एक ने कमेंट करते हुए लिखा- श्ये टीजर नहीं, बम है बम... सबका सफाया कर दिया।श एक ने लिखा- '1.02... उफ्फ ये डायलॉग, दिल जीत लिया।' एक और यूजर लिखता है- 'ये फिल्म नहीं, पूरा मूवमेंट है... 2000 करोड़ लोडिंग।' ऐसे ही कमेंट्स करते हुए यूजर टीजर को लेकर अपनी खुशी जाहिर कर रहे हैं।

बॉक्स ऑफिस पर इन फिल्मों से टक्कर

'धुरंधर' और 'धुरंधर 2' को उरी फेम निर्देशक आदित्य धर ने लिखा और निर्देशित किया है। इसका निर्माण ज्योति देशपांडे, आदित्य धर और लोकेश धर ने जियो स्टूडियोज और बी62 स्टूडियोज के बैनर तले किया है। बॉक्स ऑफिस पर टक्कर की बात करें तो, धुरंधर 2 का मुकाबला यश की फिल्म टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स और आदिवी शेष और मृणाल ठाकुर की फिल्म 'डकैत' से होगा।

होली से पहले

अन्नदाताओं

को सम्मान और समृद्धि का उपहार

कृषक उन्नति योजना के तहत 25 लाख से अधिक किसानों को ₹10,000 करोड़ का होगा एकमुश्त भुगतान

विश्वास, विकास और सम्मान
अन्नदाताओं के साथ भाजपा सरकार

अरुण सार्वा
अध्यक्ष, जिला पंचायत धमतरी

राजिम कुम्भ

राजिम कुम्भ कल्प मेला 2026

महाशिवरात्रि
के
पवित्र स्नान
पर
श्रद्धालुओं एवं मेलार्थियों
को ढ़ेर सारी
शुभकामनाएं...

इंद्रजीत महाड़िक

सदस्य

जिला पंचायत गरियाबंद